प्रौद्योगिकी प्रदर्शन'' और ''वैज्ञानिकों/उद्यमियों के साथ विद्यार्थी/वैज्ञानिक संवाद सत्र'' का 24–27 मई, 2011 को जोरहाट में आयोजन किया।

प्रभाग ने एएसटीईसी, गुवाहाटी के साथ मिलकर अ.जा./अ.ज.जा. बाहुल्य स्थल पर स्थल विशिष्ट अनुसंधान व विकास और प्रदर्शन परियोजनाओं के विकास पर 5 जनवरी, 2012 को संवेदी कार्यशाला का आयोजन किया ।

अनुसंधान व विकास और विज्ञान और प्रौद्योगिकी समर्थन प्रभागों/अनुभागों के साथ संपर्क बनाए रखा और अनुसंधान व विकास परियोजनाओं, मानवशक्ति उपयोग, वित्तीय आबंटन, मानवशक्ति पर आधार आंकड़ों, परियोजना बजट और प्रयोगशाला के सांख्यिकी प्रोफाईल पर विभिन्न जानकारी का प्रभावी अनुसंधान व विकास योजना के लिए उपयोग किया गया ।

निम्नलिखित संस्थागत प्रकाशनों का प्रकाशन किया गया

1. मई, 2011 में 12वीं पंचवर्षीय योजना हेतु योजना दस्तावेज का सार ।
2. दिसंबर, 2011 में संगठनात्मक येाजनाएं अर्थात 12वीं पंचवर्षीय योजना और कार्रवाई योजना 2012–13
3. जुलाई, 2011 में 11वीं पंचवर्षीय योजना की उपलब्धियों का सिंहावलोकन
4. अगस्त, 2011 में 12वीं पंचवर्षीय योजना के लिए सीएसआईआर–एनईआईएसटी की आंतरिक परियोजनाएं
5. 12वीं पंचवर्षीय योजना के लिए अनुमान सहित प्रस्तावित परियोजनाएं अक्तूबर, 2011 में जारी की गईं ।
6. '' सीएसआईआर–एनईआईएसटी के 2012–13 के संशोधित बजट अनुमान'' पर अक्तूबर, 2011 में दस्तावेज निकाला गया ।
7. जून, 2011 में संस्थान के ''वैज्ञानिक–वार चालू परियोजनाओं'' पर रिपोर्ट ।
8. ''उपकरणों और इनकी स्थिति की प्रभागवार सूची'' पर सितबर, 2011 में आंकड़ा आधारित रिपोर्ट ।
9. इस संस्थान की चल रही एनडब्ल्यूपी/एसआईपी/एफएसी/एनएमआईटीएलआई परियोजनाओं की प्रगति रिपोर्ट ।
10. ''विचार से कार्रवाई–आइए नवप्रवर्तन के साथ जुड़े'' (सारांश) पर जुलाई, 2011 में एक पुस्तिका प्रकाशित ।
11. ''विद्यार्थी वैज्ञानिक संवाद सभा'' शीर्षस्थ एक प्रचार सामग्री जुलाई, 2011 में तैयार की गई ।
12. थाईलैंड, नाइजेरिया और इजिप्ट से आए प्रतिनिधियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट पर जुलाई, 2011 में दस्तावेज ।
13. असम की राज्य जलवायु परिवर्तन कार्रवाई योजना विकसित करने हेतु 11 जलवायु परिवर्तन : मुद्दे और नीति निर्धारण'' पर 7 जून, 2011 को परामर्शी कार्यशाला की रिपोर्ट पर दस्तावेज ।
14. ''सीएसआईआर–एनईआईएसटी विजन 2020'' पर टीम सदस्य के रूप में सितंबर, 2011 में दस्तावेज ।

परियोजना मॉनीटरिंग और मूल्यांकन

परियोजना मॉनीटरिंग और मूल्यांकन प्रभाग सभी अनुसंधान व विकास परियोजनाओं के प्रभावी परियोजना मॉनीटरिंग और मूल्यांकन हेतु संस्थान के मुख्य केंद्र के रूप में कार्य करता है । संस्थान द्वारा संविदा की गई अनुसंधान व विकास परियोजनाओं को प्रायोजित, सहयोगी और सहायता अनुदान परियोजनाओं के रूप में और परामर्शी परियोजनाएं बाह्य एजेंसियों के निधियन से की जाती है । सैल ने सीएसआईआर निधियन परियोजनाओं जैसे नेटवर्क परियोजनाएं (एनडब्ल्यूपी), अन्य प्रयोगशाला परियोजनाओं (ओएलपी), मुख्यालय नियंत्रित परियोजनाओं (एचसीपी), सुप्रा संस्थागत परियोजनाओं (एसआईपी), प्रौद्योगिकी नेतृत्व परियोजनाओं (टीएलपी) और संकाय सृजन परियोजना (एफएसी) की मॉनीटरिंग की । सैल विभिन्न स्रोतों से संबंधित जानकारी एकत्रित करके उसे अपने विकसित साफ्टवेयर में कम्प्यूटरीकृत करता है और प्रबंधन एवं संबंधित वैज्ञानिकों को प्रदान करता है । परियोजनाओं पर रिपोर्ट बनाने हेतु संपूर्ण आधार आंकड़ों की मॉनीटरिंग और विकास करके परियोजना फाइलें बनाई जाती हैं और उनका अनुरक्षण किया जाता है । विभिन्न परियेाजनाओं की सूचनाओं को अद्यतन किया जाता रहा और प्रबंधन समर्थन व अन्य प्रयोजनों हेतु नियमित रिपोर्टें तैयार की जाती रहीं । इंडेंट के प्रकरण और प्रयोगशाला नोटबुकों का अनुरक्षण भी पीएमई सैल के महत्वपूर्ण कार्यकलाप है।

सैल द्वारा किए गए विभिन्न कार्यकलाप निम्नानुसार है :–

(1) ईसीएफ स्थिति – आधार आंकड़ों का अद्यतन और विवरणियां तैयार करना : संस्थान की विभागानुसार ईसीएफ स्थिति विवरणियां सरकारी विभागों, सार्वजनिक व निजी संगठनों से प्राप्तियों का उल्लेख करते हुए तैयार की गई । संस्थान की वित्तीय वर्ष 2011–12 के दौरान कुल ईसीएफ रू. 466.230 लाख थी जिसमें सरकारी विभागों/मंत्रालयों, सार्वजनिक क्षेत्र उद्योगों और निजी क्षेत्र संगठनों से क्रमशः 79.82 %, 15.31 % और 4.81 % प्राप्तियां शामिल है । ईसीएफ का वाणिज्यिक रूपया मूल्य रूपए 94.06 लाख था जो कुल ईसीएफ का 15.37% था । विभिन्न परियोजनाओं और सेवाओं से संस्थान की ईसीएफ नीचे दर्शायी गई हैं :–

कम सं.	स्रोत	प्राप्त राशि (रूपए लाख में)
1.	अनुदान सहायता परियोजनाएं	407.503
2.	परामर्शी परियोजनाएं	34.123
3.	तकनीकी सेवाएं	22.771
4.	विविध	1.290
5.	रॉयल्टी	0.112
6.	प्रीमिया	0.431
	जोड़े	**466.230**

क्षेत्रवार ईसीएम इस प्रकार हैं :–

क्षेत्र	ईसीएफ (रूपए लाख में)
एग्रो प्रौद्योगिकी	71.66
जैविक विज्ञान	44.49
रसायन–विज्ञान	44.33
इंजीनियरी विज्ञान	66.86
विस्तार केंद्र	45.85
भू–विज्ञान	88.75
प्रबंधन विज्ञान	38.48
सामग्री विज्ञान	65.80
जोड़	**466.23**

(2) संगठन संरचना का अनुरक्षण : संस्थान की संगठन संरचना का रखरखाव सैल द्वारा वेब आधारित पैकेज में किया जाता है । मानवशक्ति और एसआरएफ, जेआरएफ, परियोजना सहायकों, महिला वैज्ञानिकों, अनुसंधान सहयोगियों आदि अस्थायी स्टाफ सहित कर्मचारियों की स्थिति दर्शाई गई । नई नियुक्ति, सेवा–निवृत्ति, पदोन्नति आदि के कारण परिवर्तन भी शामिल किए गए।

(3) सेवा कर :पीएमई सैल ने प्रयोगशाला द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवा से देय और उपार्जित सेवा–कर की गणना का कार्य किया । वर्ष 2010–2011 में कुल वसूल सेवा–कर (10.30 % की दर से) रूपए 5. 444 लाख है जो निम्नलिखित विभिन्न शीर्षों से प्राप्त हुआ :–

श्रेणी	सेवा–कर (रूपए लाख में)
परामर्शी परियोजनाएं	3.186
परीक्षण प्रभार	2.126
प्रीमिया	0.040
विविध	0.080
रॉयल्टी	0.010
जोड़े	**5.444**

(4) परियोजना स्थिति : संविदा की गई और 2011–12 में पूर्ण की गई परियेाजनाओं की स्थिति निम्नानुसार हैं :–

कम सं.	स्रोत	संविदा की गई परियोजनाएं		पूरी की गई परियोजनाएं	
	परियोजना	संविदा मूल्य (रू. लाख में)	परियोजनाओं की संख्या	संविदा मूल्य (रू. लाख में)	परियोजनाओं की संख्या
1.	सहायता अनुदान	178.20	6	214.67	10
2.	परामर्शी	10.504	3	548.04	2
	जोड़	**188.704**	**9**	**2684.74**	**12**

(5) लेखा–परीक्षा शंकाएं : सैल ने लेखा–परीक्षा पार्टी (1) प्रधान लेखा–परीक्षा निदेशक, (वैज्ञानिक विभाग), कोलकाता शाखा (2) सीएसआईआर लेखा–परीक्षा द्वारा व्यक्त शंकाओं के उचित उत्तर तैयार किए।

(6) प्रयोगशाला आरक्षित निधि : पीएमई सैल ने चालू और समाप्त बाह्य निधियन परियोजनाओं से रूपए 34.06 लाख की अतिरिक्त एवं गैर–वापसनीय की शेष राशि के एलआरएफ के अंतरण की वित्तीय वर्ष 2011–12 में पहल की।

(7) अनुसंधान उपयोग आंकड़े : बाहय निधियन एजेंसियों द्वारा परियोजनाओं और अन्य कार्यकलापों से उपार्जित राजस्व से संबंधित अनुसंधान उपयोग आंकड़े संस्थान में रखे जाते हैं । एक वार्षिक रिपोर्ट और चार तिमाही रिपोर्ट सीएसआईआर मुख्यालय को नियमित रूप से भेजी गई–

कम सं	श्रेणी	सरकारी उद्योग	भारतीय	*सीपीएसई कंपनी	**एसपीएसई एजेंसी	विदेशी	विदेशी	अन्य	जोड़
1.	सहयोगी	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000
2.	अ. व वि. परामर्शी	3.255	9.066	7.978	10.638	0.000	0.000	0.000	30.937
3.	सहायता अनुदान	316.067	1.436	45.000	0.000	0.000	0.000	0.000	407.503
4.	प्रीमिया	0.000	0.391	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.391
5.	रॉयल्टी	0.000	0.101	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.101
6.	प्रायोजित अ.व वि.	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000	0.000
7.	तकनीकी सेवा	6.809	9.495	3.822	1.727	0.000	0.000	0.000	21.853
	जोड़	371.131	20.489	56.800	12.365	0.000	0.000	0.000	460.785

*सीपीएसई : केंद्रीय सार्वजनिक उद्यम
**एसपीएसई एजेंसी : राज्य सार्वजनिक उद्यम

(8) पीएमई सैल वेबसाइट : परियोजनाओं संबंधी सभी रिपोर्टें ऑनलाईन करने के लिए पीएमई सैल ने वेबसाईट को अद्यतन किया और उसका रखरखाव किया । पीएमई वेबसाइट एनईआईएसटी इंट्रानेट के साथ लिंक है और इस समय परियोजनाओं (पूर्ण, चालू, प्रस्ताव चरण में), अनुसंधान उपयोग आंकड़े, बाह्य नगदी प्रवाह, सभी निधियन वे नेटवर्क परियोजनाओं, सेवा–कर, संगठन संरचना, परियोजना मूल्यांकन, कम्प्यूटर एएमसी, कर्मचारी सूची, केंद्रीय योजना मॉनीटरिंग प्रणाली आदि पर रिपोर्टें प्रदर्शित कर रहा है । परियोजनाओं के प्रधान अन्वेषक अब इन परियोजनाओं पर हुए व्यय को देख सकते हैं और मॉनीटर कर सकते हैं । निधियन परियोजनाओं के निष्कर्ष का विश्लेषण करने हेतु ऑनलाइन प्रपत्र बनाया गया है और परियोजनाएं पूर्ण होने पर प्रधान अन्वेषक को इसे भरना होता है । ऑनलाईन पर उपलब्ध रिपोर्टें प्रभावी तकनीकी सहायता हेतु प्रबंधन और वैज्ञानिकों के लिए प्रभावी सिद्ध हुई हैं ।

(9) सभी कंप्यूटरों का वार्षिक अनुरक्षण संविदा : पीएमसी सैल संस्थान के सभी कंप्यूटरों और उनके पेरिफेरिलों का वार्षिक अनुरक्षण संविदा के प्रबंधन की देखरेख करता है । इस समय हमारे पास एएमसी के अंतर्गत 260 और वारंटी के अंतर्गत 121 कंप्यूटर हैं ।

(10) पीएमई सैल की विविध गतिविधियों में शामिल है :–

- विकसित कम्प्यूटर साफ्टवेयर (1) सभी आयकर निर्धारितियों के लिए फार्म–16 बनाना (2) ''मानव संसाधन वेब पोर्टल'' पर सभी कर्मचारियों के नाम, पदनाम, नियुक्ति की तारीख, योग्यता, मूल्यांकन आदि की सभी जानकारियों का प्रदर्शन । वेब पोर्टल को एनईआईएसटी इंट्रोनेट से संबद्ध किया जाना है।
- एनईआईएसटी द्वारा मूल्यांकन की सभी सीएपीएआरटी परियोजनाओं का आधार आंकड़ा।
- प्रयोगशाला नोट बुक : 87 जारी, 66 वापस व पुनः जारी और 17 का सूचीकरण और भावी संदर्भ तथा बौद्धिक संपत्ति अधिकारों के संरक्षण के लिए रखरखाव।
- एसएसबीएमटी वेबसाईट : सीएसआईआर–एनईआईएसटी में 21.01.2012 से 23.01.2012 तक आयोजित शांति स्वरूप भटनागर स्मारक टूर्नामेंट के लिए विकसित वेबसाईट । वेबसाईट टूर्नामेंट के सभी प्रमुख कार्यों और चालू गतिविधियों का प्रदर्शन करती है । यह एनईआईएसटी वेबसाईट से संबद्ध है।

संक्षेप में, पीएमई प्रबंधन और बाह्य निधियन परियोजनाओं के संदर्भ में वैज्ञानिकों को भी वांछित आंकड़े और रिपोर्टें प्रदान करने हेतु सहायक प्रभाग के रूप में कार्य करता है।

आयोजित कार्यशाला/संगोष्ठी

मधुमेह में पौधों पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

डॉ. पी.जी. राव, निदेशक,
सीएसआईआर–एनईआईएसटी संगोष्ठी में बोलते हुए

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने एशियन नेटवर्क ऑफ रिसर्च ऑन एंटी–डायबिटिक प्लांट्स (एएनआरएपी), ढाका (बांग्लादेश), ईआरडी फाउंडेशन, श्रीमंत शंकरदेव यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंसिस और गवर्नमेंट आयुर्वेदिक कॉलेज एंड हास्पिटल, गुवाहाटी के साथ मिलकर 8–9 अप्रैल, 2011 को ''मधुमेह में पौधे : संभावनाएं और चुनौतियां'' पर दूसरी राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की । फणिधर दत्ता सेमिनार हाल, गुवाहाटी विश्वविद्यालय में हुई इस संगोष्ठी में विख्यात वैज्ञानिक, डॉक्टर, विद्यार्थी और बांग्लादेश की विभिन्न संस्थानों के शोध–छात्रों, बांग्लादेश गवर्नमेंट आयुर्वेदिक कॉलेज, गुवाहाटी, गुवाहाटी मेडिकल कालेज, गुवाहाटी विश्वविद्यालय के अतिरिक्त सीएसआईआर–एनईआईएसटी के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया । प्रोफेसर एम. मोसीहुज्जमन, अध्यक्ष, एएनआरएपी, ढाका ने दीप प्रज्ज्वलित करके संगोष्ठी का उद्घाटन किया । डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, प्रोफेसर ओ.के. मेधी, उप–कुलपति, गुवाहाटी विश्वविद्यालय और प्रोफेसर यू.सी. सरमा, श्रीमंत शंकरदेव यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंसिस ने भी उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ाई । संगोष्ठी में विशेषकर उत्तर–पूर्वी क्षेत्र को जैव–विविधता संवेदनशील स्थल के रूप में मानते हुए, क्षेत्र में वैज्ञानिक ज्ञान को उन्नत करने की महत्ता पर चर्चा की गई । भारत और बांग्लादेश के शोध–छात्रों और वैज्ञानिकों के बीच सहयोगपूर्ण अनुसंधान कार्य हेतु प्रस्तावों पर संगोष्ठी में चर्चा हुई।

जलवायु परिवर्तन पर सीएसआईआर–एनईआईएसटी में आयोजित सलाहकार कार्यशाला

(बाएं) डॉ. एम.हजारिका, उद्घाटन संबोधन करते हुए । (दाएं) तकनीकी समूह की एक विषयम सत्र पर चर्चा करते हुए ।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने असम प्रौद्योगिकी और पर्यावरण परिषद (एएसटीईसी), गुवाहाटी के साथ मिलकर ''जलवायु परिवर्तन पर सलाहकार कार्यशाला : मुद्दे और नीति निरूपण'' पर सीएसआईआर–एनईआईएसटी में 7 जून, 2011 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया । यह कार्यशाला एएसटीईसी द्वारा अपने किस्म की आयोजित चौथी और ऊपरी असम में आयोजित पहली कार्यशाला थी । जोरहाट टाऊन और इसके इर्द–गिर्द की विभिन्न संस्थाओं नामतः स्माल टी ग्रोअर्स एसोसिएशन, आरएमआरआई, सीएमईआर एंड टीआई और टीआरए, टोकलाई, एएयू प्रिंस ऑफ व्हेल्स, मजुली की शैक्षणिक संस्थाएं के विख्यात व्यक्तियों, जोरहाट के वरिष्ठ नागरिकों के प्रतिनिधि, सहायक वन संरक्षक, गोलाघाट बार एसोशिएशन के सदस्य और सीएसआईआर–एनईआईएसटी की पुरानी व नई दोनों, बिरादरी ने बहुतायत में भाग लिया । डॉ. मृदुल हजारिका, निदेशक, टीआरए, टोकलाई ने उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में हिस्सा लिया और डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने समारोह की अध्यक्षता की। उद्घाटन दीप विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा प्रज्ज्वलित किया गया । डॉ. हजारिका ने अपने उद्घाटन अभिभाषण में कहा कि जलवायु परिवर्तन एक तथ्य है जो वर्षों से हो रहा है और इसीलिए विश्वीय और क्षेत्रीय जलवायु परिवर्तन के कारण प्रतिवर्ष 0.01 प्रतिशत प्रजातियों के

विलोपन की रोकथाम के लिए मॉडल बनाए जाने चाहिए । उन्होंने कहा कि विभिन्न प्रयोजनों के लिए नियमित आधार पर 50,000–60,000 पौध प्रजातियों का उपयोग किया जा रहा है और हरित पौधे कार्बन के कारण मर रहे हैं । अतः जैव–विविधता एक महत्वपूर्ण समाधान हो सकता है । उन्होंने बताया कि 90 वर्ष पुराने टीआरए आंकड़ों के अनुसार असम में तापमान में 2 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हुई है और 200 एम बारिश की कमी हुई है । उन्होंने सुझाव दिया कि जलवायु परिवर्तन के विषयों को स्कूलों की प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में शामिल किए जाने की आवश्यकता है ताकि मुद्दों को आधारभूत स्तर पर अच्छी तरह से समझा जा सके । डॉ. राव ने अपने मुख्य अभिभाषण में कहा कि जलवायु परिवर्तन का समाधान करने के लिए आवश्यक प्रौद्योगिकियां और समाधान इस प्रकार किया जाए कि आम आदमी को खाद्य, आश्रय व बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं का दीर्घकालिक लाभ मिल सके । उन्होंने उल्लेख किया कि गुणतावान पेयजल और स्वास्थ्य देखभाल के प्रति योगदान हेतु नई अवधारणाएं और प्रौद्योगिकियां तलाशी जाए डॉ. एस. पी. सैकिया, वैज्ञानिक, एनईआईएसटी के धन्यवाद ज्ञापन के उपरांत उद्घाटन कार्यक्रम समाप्त हुआ। तत्पश्चात् छह विषय अगुवाईयों के नेतृत्व में कार्यशाला के छह सत्र हुए नामतः ''जीवन गुणवत्ता हेतु दीर्घकालिक व्यवहार'', ''जल सुरक्षा और निरंतरता'', दीर्घकालिक कृषि व जीवनयापन सुरक्षा'', ''प्राकृतिक आपदाओं में कमी लाना और संकटकाल प्रबंधन,'' जलवायु परिवर्तन (ऊर्जा पर्याप्तता और कुशलता पर केंद्रित) के प्रति अनुकूलता'' और ''वन एवं जंगली जीवन का संरक्षण और दीर्धकालीन प्रबंधन'' प्रत्येक विषय को संबंधित विषय के विशेषज्ञ के साथ व्यक्तिगत समूह ने चर्चा की जिसकी अगुवाई एक विषय अगुआ ने की । इन समूहों ने राज्य की समस्याएं चिंहित करने, वर्तमान नीति की समीक्षा, विकास और मध्यवर्तन, अनुसंधान खाई, क्षमता निर्माण और स्थानीय स्थितियों में निरूपण आदि पर चर्चा और मंथन किया और चार घोषित पक्षों पर सिफारिशें प्रस्तुत कीं। डॉ. आर.सी. बोरूआह उत्कृष्ट वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी की अध्यक्षता में सम्पन्न समापन सत्र में सभी छः विषय अगुवाओं ने समूह चर्चा का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जिसके उपरांत उपस्थित सदस्यों ने ''असम में कार्रवाई योजना'' गठित करने के लिए महत्वपूर्ण निष्कर्षों को संकलित करने के निर्णय लिए। अन्यों के अतिरिक्त, समापन समारोह में श्री जयंत शर्मा, वरिष्ठ प्रतिनिधि, एएसटीईसी ने भी भाग लिया।

लघु चाय बुवाईकर्त्ताओं के साथ संवादात्मक बैठक

(बाएं) डॉ. पवन कपूर, निदेशक सीएसआईआर–सीएसआईओ, उद्घाटन समारोह में भाषण देते हुए। (दाएं) श्रोतागण

सीएसआईआर–उत्तर–पूर्व विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, जोरहाट द्वारा सीएसआईआर–केंद्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन, चण्डीगढ़ के साथ मिलकर 23 जून, 2011 को अपने प्रागंण में जोरहाट और आसपास के लघु चाय बुवाईकर्ताओं और उत्पादकों के साथ आधे दिन की संवादात्मक बैठक की। इस संवादात्मक बैठक का प्रयोजन लघु चाय बुवाईकर्ताओं द्वारा उनकी फैक्ट्रियों में उपयुक्त एस एंड टी मध्यवर्तन के साथ हो रही समस्याओं को संबोधित करना था। डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने सभा का स्वागत करते हुए, कार्यक्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला और इस संबंध में उन्होंने सीएसआईआर योजना, सीएसआईआर 800 का भी उल्लेख किया जिसका लक्ष्य सभी क्षेत्रों से प्रमाणित प्रौद्योगिकियों के साथ गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले 800 मिलियन लोगों के जीवन में सुधार लाना था । अपने उद्घाटन अभिभाषण में, डॉ. पवन कपूर, निदेशक, सीएसआईआर–सीएसआईओ ने लघु चाय बुवाईकर्ताओं/उत्पादकों द्वारा मशीनों, पत्ती की विविधता, चाय की गुणता आदि जैसी समस्याओं के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। उद्घाटन सत्र के उपरांत तकनीकी सत्र हुआ जिसमें डॉ. कपूर और श्री वी.पी.एस. कालसी, सीएसआईआर–सीएसआईओ के ''चाय प्रकरण हेतु उपकरण'' और ''लघु चाय उत्पादकों हेतु मशीनें'' क्रमशः पर विस्तृत प्रस्तुति दी । डॉ. कपूर ने अपने भाषण में कहा कि चाय की गुणवत्ता के लिए मृदा, जलवायु, किस्म आदि जैसे तत्व जिम्मेदार हैं । उन्होंने चाय प्रकरण में निहित विभिन्न प्रक्रियाओं जैसे अपक्षय, आवर्ती, किण्वन और सुखाने के बारे में विस्तृत चर्चा की। तत्पश्चात, उन्होंने कहा कि लधु चाय बुवाईकर्ताओं की समस्याएं कम जमीन होने, चाय का कम मूल्य मिलना, संरचना और वित्त की कमी के कारण है जिसके कारण कई उनकी अपनी चाय पत्ती संसाधित करने में असमर्थ है और चाय पत्ती फैक्ट्रियों

को भेजते है जिससे चाय में विविधता आ जाती है । उन्होंने प्रतिभागियों को यह भी बताया कि सीडीएसी, सीएसआईआर – सीईईआरआई–पिलानी और टीआरए, टोकलाई के संयुक्त प्रयास से टीआरए, टोकलाई में मॉडल चाय फैक्ट्री विकसित की गई । श्री कालीसी ने अपने भाषण में पर्यावरणीय नियंत्रित निर्माण (ईसीएम) प्रणाली, के बारे में बताया जिससे चाय प्रक्रिया मापदंडों के ऑन–लाईन परीक्षण और प्रकरण समय में भी कमी करने की गुंजाइश है । इससे पूर्व उन्होंने कहा कि विश्व में चाय उत्पादन में भारत दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है जिसमें से केवल असम ही 40 प्रतिशत उत्पादन करता है । उन्होंने लघु चाय बुवाईकर्त्ताओं के हितार्थ नई मशीन के प्रारूप की चर्चा की जिसपर सीएसआईआर–सीएसआईओ कार्य कर रहा है । इस सभा का समापन संवादात्मक सत्र के साथ हुआ जिसमें वक्ताओं ने चाय प्रकरण मशीन जैसे चाय पत्ती छंटाई के लिए मशीन की उपलब्धता, जिसपर फिलहाल चर्चा की गई । मशीन के विकास आदि पर सहभागियों के प्रश्नों के उत्तर दिए । इस संवादात्मक सभा में 100 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और यह सभा लघु चाय उत्पादकों एवं उनके हितार्थ कार्य कर रहे सीएसआईआर संगठन को एक साथ आमने–सामने लाने में अत्यंत सफल रही । चाय उत्पादन के विभिन्न पक्षों पर उत्पादकों से प्राप्त प्रतिपुष्टि का सीएसआईआर की 12वीं पंचवर्षीय योजना की अनुसंधान योजना में प्रयोग किया जाएगा ।

अनुसंधान व विकास – खनिजों पर उद्योग संवादात्मक सत्र आयोजित

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने खनिजों पर एक अनुसंधान व विकास–उद्योग संवादात्मक सत्र 11 अगस्त, 2011 को आयोजित किया । एम. एस. आयंगर हाल में हुए इस सत्र में खनिज क्षेत्र के विशेषज्ञ जैसे प्रोफेसर टी सी राव, पूर्व–प्रोफेसर, आईएसएम, धनबाद

व पूर्व–निदेशक, एएमपीआरआई (आरआरएल), भोपाल सहित उद्योग पार्टनर जैसे श्री मनीष भारतिया, एम डी और डॉ. ए. बंधोपाध्याय, उपाध्यक्ष, सीडीई प्राईवेट लिमिटेड और श्री मार ईमचेन, वरिष्ठ भू–विज्ञानी, उपमहाप्रबंधक, नागालैंड स्रोत व्यक्ति के रूप में और डॉ. जे वी, सदस्य–सचिव, नागालैंड विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद, नागालैंड एवं सीएसआईआर–एनईआईएसटी वैज्ञानिक परिवार ने हिस्सा लिया । डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने अपने स्वागत भाषण में इस सम्मेलन की महत्ता का उल्लेख किया और सम्मेलन के आयोजन में प्रोफेसर टी.सी. राव को उनकी सहभागिता के लिए आभार प्रकट किया । प्रोफेसर राव ने अपने अभिभाषण में वैज्ञानिकों को उनके मानसिक अवरोधन से बाहर निकलकर राज्य सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभागों एवं संबंधित क्षेत्र में उद्योग पार्टनरों के साथ कार्रवाई योजना बनाने के लिए प्रोत्साहित किया । श्री मनीश ने सीडीई प्राइवेट लिमिटेड, इसका संगठन स्तर, विभिन्न शाखा कार्यालयों और लोह–अयस्क से संबंधित कार्यकलाप और इनके विभिन्न अनुप्रयोग, ठोस अपव्यय, विशेषकर भारत में, के निर्माण एवं विध्वंस के पुनर्चक्रण पर संक्षिप्त प्रस्तुति दी । उन्होंने सीएसआईआर–एनईआईएसटी की इसके विभिन्न प्रभागों में 10–11 अगस्त, 2011 के दौरान दौरे की व्यवस्था करने पर सराहना की । उन्होंने सीएसआईआर–एनईआईएसटी द्वारा लौह–अयस्क, उच्च शक्ति प्रोपैंट और कोयले पर किए गए कार्यों की और अधिक जानकारी में रूचि व्यक्त की । डॉ. ए. बंधोपाध्याय ने ''लौह–अयस्क के प्रक्रमण–एक सूक्ष्म मूल्यांकन'' पर एक वार्ता प्रस्तुत की जिसमें उन्होंने लौह–अयस्क साफ करने की प्रौद्योगिकी, प्रक्रिया विकास और उच्च ग्रेड अयस्क की इंजीनियरी प्रौद्योगिकी की, अयस्क की सफाई, स्वयं हितकारी, साफ अयस्क के प्रयोग के लाभ, भारत में प्रचालित सीडीई प्रौद्योगिकी, सफाई के परिणाम, जिगिंग फाइन्स के परीक्षण परिणाम, उत्पादन हेतु पल्सेंटर और स्लाईम बेनिधिकेशन हेतु नैनो धुलाई पर विस्तारपूर्वक चर्चा की । सीडीई लौह अयस्क हेतु बेनिफिएशन प्रदान करता है और एक लौह अयस्क संयंत्र पर एक वीडियो भी प्रस्तुत किया गया । पत्थरों से रेत बनाने की भी प्रस्तुती की गई जिसमें उनका मत था कि इसकी उत्तर–पूर्वी

चल रहा संवादात्मक सत्र

राज्यों जैसे नागालैंड में काफी मांग होगी । डॉ. जावी ने अपने भाषण में कहा कि नागालैंड में उपलब्ध लौह अयस्क क्रोमियम और निकल आदि सहित हैमेटाईट है । उन्होंने कहा कि राज्य को चूने पत्थर का भी उपयोग करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में, प्रोफेसर राव ने क्षेत्र का खनिज सर्वेक्षण करने के लिए भारतीय भू–विज्ञान सर्वेक्षण अथवा अन्य सर्वेक्षण संगठन और सभी उत्तर–पूर्वी राज्यों की अन्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद ऐसे क्षेत्रों की पहचान करने जहां सीएसआईआर–एनईआईएसटी अपनी सहायता प्रदान कर सके और फिर क्षेत्र में सामाजिक–आर्थिक विकास लाने हेतु उद्योग और उद्यमियों के साथ संबद्धता करने का सुझाव दिया । डॉ. राव ने कहा कि एनईआईएसटी के वैज्ञानिकों की विज्ञान और प्रौद्योगिकी की राज्य परिषद और राज्य के उद्योग पार्टनर व उद्यमी, जिनका राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद प्राथमिक चयन कर सकती है, के साथ अहम भूमिका है । सीडीई के 150 टीपीएच निर्माण और विध्वंस मलबे के पुर्नचक्रण संयंत्र का प्रदर्शन किया । डॉ. बी.पी. बरूआ, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कोयला रसायन–विज्ञान प्रभाग, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने ''अनुसंधान व विकास–उत्तर–पूर्वी क्षेत्र के ऊर्जा खनिजों की लाभप्रद उपयोगिता पर उद्योग संवादात्मक सत्र–एक मूल्यांकन'' पर प्रस्तुति दी । प्रोफेसर राव ने क्षेत्र के कोयले के पूर्ण पैकेज का वर्णन करने वाली प्रस्तुति की अत्यंत सराहना की । उन्होंने विश्लेषक कार्य जैसे क्षेत्र में खनिज उपयोगिता की संभावनाओं, औद्योगिक साझेदारों के पास जाने से पूर्व विशिष्ट उद्योगों में प्रयुक्त

कोयले की विशिष्ट किस्मों की पहचान करने की सलाह दी। ''डॉ. पी. सेनगुप्ता, प्रमुख वैज्ञानिक व अध्यक्ष, सामग्री विज्ञान प्रभाग, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने ''अरूणाचल प्रदेश के कुछ ग्रेफाईट भंडारों का चरित्र–चित्रण, लाभप्रदता और उपयोगिता अध्ययन'' प्रस्तुत किया। सम्मेलन राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषदों, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, उद्योग साझेदार और अन्य सरकारी विभागों के बीच सहयोगपूर्ण कार्य करने की योजना बनाने के साथ संपन्न हुआ । यह मत भी था कि कम क्षमता वाले पौधों का आवश्यक आशोधन और प्रवर्धन स्थानीय उद्यमियों के लिए किया जाए, जो उन्हें क्षेत्र में बेहतर प्रचालन में मदद करेंगे। इसके अलावा, उनके प्रवास के दौरान दो संगठनों के बीच सहयोगपूर्ण कार्य पर भी चर्चा की गई।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी में दीर्घकालिक सड़क प्रौद्योगिकियों पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला

(बाएं) श्री एम.सी. बोरो, आयुक्त व विशेष सचिव, असम सरकार, अपना अभिभाषण करते हुए । मंच पर आसीन (दायें से), डॉ.पी.जी.राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, डॉ. एस.गंगोपाध्याय, सीएसआईआर–सीआरआरआई और डॉ. पी.के. जैन, प्रमुख वैज्ञानिक, सीएसआईआर–सीआरआरआई (दायें) कार्यशाला में श्रोतागण ।

सीएसआईआर–केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने उत्तर–पूर्व विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, जोरहाट के साथ मिलकर उत्तर–पूर्व में सड़क निर्माण हेतु दीर्घकालिक प्रौद्योगिकी पर राष्ट्रीय कार्यशाला का सीएसआईआर–एनईआईएसटी, जोरहाट परिसर में 19 सितंबर, 2011 को आयोजन किया । इस कार्यशाला को लोक कार्य विभाग, असम सरकार का समर्थन मिला और इस क्षेत्र में यह अपने किस्म की पहली कार्यशाला थी और भारत के विभिन्न संगठनों, विशेषकर उत्तर–पूर्व से जैसे सीमा सड़क संगठन, लोक कल्याण विभाग, असम सरकार, डिब्रूगढ़ आरआर प्रभाग, जोरहाट रोड सर्कल, एमईएस–जीई–जोरहाट (सेना), एनएचएआई, आईआईटी–गुवाहाटी, ईआईपीएल और गुवाहाटी से निजी कंपनियों जैसे बिटकैम, ओम इंफ्राकोन प्राइवेट लिमिटेड आदि के लगभग 180 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया । डॉ. जे.एन. बरूआह सभागार में आयोजित कार्यशाला के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता डॉ. एस. गंगोपाध्याय, निदेशक, सीआरआरआई ने की जिसमें श्री एम.सी. बोरो, आयुक्त व विशेष सचिव, असम सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । इस कार्यशाला में इंजीनियर, वैज्ञानिक, सरकारी अधिकारी, उत्तर–पूर्व की विभिन्न इंजीनियरी संस्थानों के विद्यार्थी और संकाय व अन्य शामिल हुए । डॉ. गंगोपाध्याय ने अध्यक्षीय अभिभाषण दिया और उल्लेख किया कि कमजोर परिवहन व्यवस्था अर्थव्यवस्था को कमजोर करती है और इसीलिए क्षेत्र की उन्नति के लिए निरंतर संबद्धता के लिए तलाश महत्वपूर्ण है । उन्होंने कहा कि आधुनिक परिवहन प्रणाली हो जो आर्थिक और पर्यावरणीय रूप से वहनीय हो । उन्होंने कहा कि ऊर्जा कुशल प्रौद्योगिकियां जैसे बिटुमन एडिटिव और वार्म मिक्सिस को उत्तर–पूर्व भारत के जैव–विविधता संपन्न पारिस्थिति–विज्ञान कोरिडोर विकसित करने की आवश्यकता है और इसीलिए क्षेत्र के अति–योग्य राज्यों के लिए दीर्घकालिक सड़क बनाने के लिए अनुसंधानकर्ताओं, उद्योगों और स्थानीय प्रशासन सहित कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है । डॉ. पी.जी. राव, निदेशक एनईआईएसटी ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि क्षेत्र में उचित सड़क संयोजकता की कमी है और इसीलिए विशिष्ट प्रौद्योगिकियों को विकसित किया जाना चाहिए । उन्होंने कहा कि सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने 9वीं और 10वीं पंचवर्षीय योजना में सड़क निर्माण हेतु ऊर्जा कुशल प्रौद्योगिकी हेतु बिटुमन के बेहतर उपयोग पर परियोजनाएं पूरी की जा चुकी हैं और इस संबंध में सीएसआईआर–सीआरआरआई गुणता एवं कार्य की सीएसआईआर–एनईआईएसटी के साथ मिलकर आपूर्ति कर सकती है । इस अवसर पर ''उत्तर–पूर्व में सड़क निर्माण हेतु दीर्घकालिक प्रौद्योगिकियों पर राष्ट्रीय कार्यशाला'' पर एक दस्तावेज श्री बोरो, समारोह के मुख्य अतिथि द्वारा जारी किया गया । श्री बोरो ने अपने संबोधन में वैज्ञानिकों, इंजीनियरों से ऊर्जा कुशल प्रौद्योगिकियां बनाने और सभी के लिए सुगम्य हरित सड़क बनाने की चुनौति स्वीकारने का आग्रह किया । उन्होंने सूचित किया कि सड़क निर्माण के लिए कोल्ड मिक्स प्रौद्योगिकियां असम में प्रारंभ हो चुकी है जिनमें असम में स्लोप संरक्षण हेतु बेहतर घास का प्रयोग किया जा रहा है । उन्होंने आखिर में सड़क निर्माण हेतु ऊर्जा कुशल प्रौद्योगिकी के विकास और कार्यान्वयन पर जोर दिया जो कार्बन क्रेडित अर्जित करने में भी सहायक होगी । बाद में, तकनीकी सत्र में उत्तर–पूर्व क्षेत्र हेतु ग्रामीण सड़कों, इमल्शन व कोल्ड मिक्स प्रौद्योगिकी कार्य मिक्स एवं एडहीशन व पैंचिंग प्रौद्योगिकी पर चर्चा की गई ।

हैजार्ड – न्यूनतम जोखिम, अधिकतम जागरूकता पर क्षेत्र स्तरीय कार्यशाला

(बाएं) श्री एम.रहमान, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं कार्यशाला के समन्वयक, तकनीकी सत्र में अपना भाषण करते हुए। (दायें) आयोजकों के साथ सहभागी।

सीएसआईआर–उत्तर–पूर्व विज्ञान और औद्योगिक संस्थान ने ''हैजार्ड–न्यूनतम जोखिम, अधिकतम जागरूकता'' पर आर्यभट्ट विज्ञान केंद्र कर्बी अंगलोंग जिला के सहयोग से खेरोनी गर्ल्स हाई स्कूल, खेरोनी, कर्बी अंगलोंग में 13–14 अक्तूबर के दौरान दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की । इस कार्यशाला में 52 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया जिनमें एनसीसी, एनएसएस, हाइलाकांडी जिले के हेजार्ड कार्यकर्ता, करीमगंज, कछार, एनसी हिल्स, कर्बी अंगलांग और खेरोनी के आसपास के क्षेत्र। इस कार्यशाला का उद्घाटन 13 अक्तूबर, 2011 को सुश्री ऊषा रानी गोहेन, प्रधानाचार्य, खेरोनी हायर सैकेंड्री स्कूल ने मुख्य अतिथि के रूप में किया। इस अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए सुश्री गोहेन ने इस प्रकार के हेजार्ड–प्रवृत्त दूरस्थ स्थान में कार्यशाला की महत्ता के बारे में बताया। श्री एम रहमान, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, सीएसआईआर–एनईआईएसटी एवं कार्यशाला के समन्वयक ने इसी विषय पर प्रयोगशाला द्वारा विगत में आयोजित कार्यशालाओं की उपलब्धियों और इतिहास के बारे में उल्लेख किया और कहा कि एनसीएसटीसी, डीएसटी, नई दिल्ली, भारत सरकार इस कार्यशाला के उत्प्रेरक और समर्थक है। श्री कूलेन कालिता, श्री दीफू हाई स्कूल, कर्बी आंगलोंग के संकाय सदस्य ने कार्यशाला के उद्देश्य से सभी को परिचित कराया। श्री बीरेन डेका, विज्ञान प्राध्यापक, खेरोनी गर्ल्स हाई स्कूल और समन्वयक, आर्यभट्ट विज्ञान केंद्र, रोंगखंग ब्लॉक ने एचएसएलसी 2009–10 परीक्षा में उच्च श्रेणी प्राप्त तीन उत्कृष्ट विद्यार्थियों को एएसटीईसी, असम सरकार द्वारा प्रायोजित सोलर लैंप वितरित किए।

कार्यशाला में हेजार्ड के विभिन्न विषयों और तकनीकी व्याख्यानों के जरिए इसके संरक्षित उपायों पर चर्चा की गई और कई स्रोत व्यक्तियों ने सजीव प्रदर्शन दिया। स्रोत व्यक्तियों में प्रोफेसर अबोनी भगवती, गुवाहाटी विश्वविद्यालय; श्री एम. रहमान, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी व कार्यशाला के समन्वयक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी; श्री होरेन पेंगू, लोंका फायर स्टेशन, कर्बी अंगलोंग; डॉ. देबाकर गोस्वामी, एसोशिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष–वनस्पतिशास्त्र विभाग, होजाई कॉलेज; डॉ. जतिन कालिता, कनिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी; डॉ. दिपुल कालिता, वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी और डॉ. जयधन टिमंग, प्रभारी खेरोनी, एसएसी शामिल थे ।

प्रोफेसर भगवती, ने उत्तर–पूर्व भारत के विशेष संदर्भ में टैक्टोनिक प्लेट्स की स्थिति और गति की सहायता से निरंतर भूकंप आने और इसके कारणों के बारे में विस्तृत चर्चा की। श्री एम. रहमान ने भूकंप के प्रबंधन–भूकंप के पहले और बाद में क्या करें और क्या न करें का उल्लेख किया। श्री होरेन पेंगू ने आगजनी के दौरान रक्षात्मक उपायों के बारे में बताया। डॉ. देबाकर गोस्वामी ने बाढ़ प्रबंधन और मृदा संरक्षण की व्याख्या की। डॉ. जतिन कालिता ने रसायन हेजार्ड और मानव व अन्य जीवों पर इसके प्रभाव पर भाषण दिया जिसमें खेती में उर्वरक, कीट–नाशक, फफूंदनाशक के उचित अनुप्रयोग पर बल दिया। डॉ. दिपुल कालिता ने दीर्धकालिक उत्पादों के बारे में बताया। डॉ. जयधन तिमुंग ने प्राथमिक उपचार का प्रदर्शन किया।

14 अक्तूबर, 2011 को हुए समापन समारोह में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी उप–केंद्र सजातीय डिजाईन और सामग्री पर कार्यशाला व प्रदर्शनी

(बाएं) मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्ज्वलन । (दायें) उत्तर–पूर्व के सजातीय डिजाईन पर आधारित विभिन्न उत्पादों का प्रदर्शन।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी उप–केंद्र, इंफाल ने सीएसआईआर चर्म अनुसंधान संस्थान, चैन्नई के साथ मिलकर उत्तर–पूर्व के सजातीय डिजाईनों और सामग्रियों पर आधारित नवीन उत्पादों के 2 दिवसीय कार्यशाला व प्रदर्शनी अपने परिसर में आयोजित की । डॉ. एच बी सिंह, वैज्ञानिक–प्रभारी, सीएसआईआर–एनईआईएसटी उपकेंद्र ने 18 नवंबर, 2011 को उद्घाटन समारोह में स्वागत भाषण दिया जबकि डॉ. डी. चंद्रमौली, प्रमुख वैज्ञानिक, सीएसआईआर–सीएलआरआई ने कार्यक्रम और चर्म अनुसंधान में सीएलआरआई के योगदान के बारे में संक्षेप में बताया और विश्व में उच्चतम विपणन तैयार करने हेतु उत्तर–पूर्व के सजातीय डिजाइन अपनाकर स्वदेशी चर्म उत्पादों की गुणता वृद्धि पर जोर दिया । इस कार्यशाला में सीएसआईआर–एनईआईएसटी परिवार और अन्य ख्यातिप्राप्त व्यक्तियों के अलावा, डॉ.टी. मीन्या, माननीय संसद सदस्य (लोकसभा), डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, जोरहाट और श्री राधा बिनोद, कोईजम एमएलए (पूर्व–मुख्यमंत्री), मणिपुर, मुख्य अतिथि के रूप में, माननीय अतिथि व कार्यशाला के अध्यक्ष, क्रमशः सम्मिलित हुए । डॉ. पी.जी. राव ने एनईआईएसटी के योगदान का उल्लेख किया और आश्वासन दिया कि एनईआईएसटी अपनी प्रौद्योगिकियों के अलावा सीएसआईआर की अन्य प्रयोगशालाओं के बीच संपर्क के रूप में कार्य करेगा जो इस क्षेत्र की स्थानीय जनसंख्या के लिए लाभकारी होगा । डॉ. टी. मीनवा, माननीय संसद सदस्य (लोकसभा) ने इस पर जोर दिया कि अनुसंधान व विकास समग्र विकास की कुंजी है । श्री राधा बिनोद कोइजम, पूर्व मुख्यमंत्री और माननीय एमएलए, मणिपुर ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में विज्ञान व प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा नियोजित युवाओं हेतु व्यवसायिक प्रशिक्षण पर जोर दिया । कार्यशाला में सीएसआईआर–सीएलआरआई और सीएसआईआर–एनईआईएसटी द्वारा संयुक्त रूप से विकसित सजातीय पैंतालिस उत्पादों का प्रदर्शन जनता के लिए किया ।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी और सीएसआईआर–सीएसआईओ द्वारा संयुक्त रूप से लघु चाय बुवाईकर्ताओं के साथ संवादात्मक बैठक

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने अपनी सहायक प्रयोगशाला, सीएसआईआर–सीएसआईओ, चण्डीगढ़ के साथ मिलकर 20 नवंबर, 2011 को डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में लघु चाय बुवाईकर्ताओं के साथ बैठक की जिसका उद्देश्य लघु चाय बुवाईकर्ताओं और उत्पादकों के समक्ष उनकी फैक्ट्रियों में प्रयुक्त की जा रही मशीनों के संबंध में आ रही कठिनाईयों और इन समस्याओं के हल निकालने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के संभावित हस्तक्षेप करना था। इस बैठक की अध्यक्षता श्री अश्वनी बरूआ, अध्यक्ष, ऑल असम स्माल टी ग्रोअर्स एसोसिएशन (एएएसटीजीए), राज्य समिति ने की और इसमें डॉ. पवन कपूर, निदेशक, सीएसआईआर–सीएसआईओ मुख्य अतिथि के रूप में और श्री पी.के. गोस्वामी, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी के अलावा आमंत्रित अतिथि और प्रतिभागी शामिल हुए। अपने स्वागत भाषण में श्री पी.के. गोस्वामी ने कार्यक्रम की महत्ता का उल्लेख किया और उन्होंने सीएसआईआर 800 योजना के बारे में बताया जिसका लक्ष्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी के हस्तक्षेप के जरिए आम आदमी की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है। डॉ. पवन कपूर ने अपने संबोधन में लघु चाय बुवाईकर्त्ताओं/उत्पादकों द्वारा उपकरणों, पत्ती की विषमता, चाय की गुणता आदि जैसी समस्याओं के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। डॉ. कपूर ने 'चाय प्रकरण हेतु इन्स्ट्रूमेंटेशन'' और लघु चाय उत्पादकों हेतु उपकरणों'' की प्रस्तुति दी और चाय गुणवत्ता

के लिए जिम्मेदार तत्वों जैसे मृदा, जलवायु, किस्म आदि पर चर्चा की । उन्होंने चाय प्रक्रम की विभिन्न प्रक्रियाओं जैसे मुरझाना, आवर्तन, किण्वीकरण और सोखन के बारे में विस्तृत चर्चा की। उन्होंने यह भी कहा कि लघु चाय बुनाईकर्त्ताओं की समस्याएं उनकी कम भूमि, चाय के लिए प्राप्त कम मूल्य, संरचना और वित की कमी है जिसके कारण कई अपनी चाय पत्ती का प्रकरण करने में असमर्थ हैं और इसीलिए वे इसे चाय फैक्ट्रियों को भेजते है जिसके फलस्वरूप चाय में विषमता आ जाती है। उन्होंने प्रतिभागियों को बताया कि सीडीएडी, सीएसआईआर–सीईईआरआई, पिलानी और टीआरए–टोकलाई के संयुक्त प्रयास से टीआरए, टोकलाई में मॉडल चाय फैक्ट्री विकसित की गई है। उन्होंने पर्यावरणीय नियंत्रित निर्माण प्रणाली (ईसीएम) भी स्पष्ट की जो प्रकरण मापदंडों को बनाए रखते हुए चाय के ऑनलाईन प्रक्रम के लिए गुंजाईश प्रदान करती है जिससे गुणता निर्माण के प्रक्रम समय में कमी आती है। इससे पूर्व उन्होंने नई मशीन के प्रोटोटाईप का उल्लेख किया जो सीएसआईआर–सीएसआईओ लघु चाय उत्पादकों को ध्यान में रखकर बनाने की प्रक्रिया में है। संवादात्मक सत्र में उत्पादकों के समय आ रही समस्याओं पर चर्चा की गई और प्रक्रम मशीनों पर प्रतिभागियों के प्रश्नों पर चर्चा की गई । श्री अश्वनी बरूआ ने अपने अध्यक्षीय भाषण में लघु चाय उत्पादकों के लिए वहनीय उपकरणों के विकास के लिए सीएसआईआर के प्रयासों की सराहना की । उन्होंने अपील की कि छोटी चाय फैक्ट्री के लिए लाईसेंस के मुद्दे पर उच्च स्तर पर बातचीत की जाए । डॉ. कपूर ने चाय उत्पादकों को आश्वासन दिया कि चाय उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर उत्पादकों के प्राप्त प्रतिक्रियाओं का अनुसंधान व विकास परियोजनाओं की 12वीं पंचवर्षीय योजना में अनुसंधान योजना के लिए उपयोग किया जाएगा । श्री अनिल फूकोन, कार्यकारी सदस्य, एएएसटीजीए के धन्यवाद ज्ञापन के बाद बैठक का समापन हुआ ।

सीनीय स्वास्थ्य परंपराओं के प्रलेखीकरण और मूल्यांकन पर आयोजित कार्यशाला

(बाएं) श्री ओटेम दाई, आईएएस, निदेशक, एनईआईएफएम, उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में संभाषण करते हुए। मंच पर दाएं से श्री जी. हरीराम मूर्ति, सहायक निदेशक, एफआरएलएचटी, बैंगलौर, डॉ. पीजी राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी और डॉ. एस. सी. नाथ, प्रमुख वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी। (दायें) श्री ओटेम दाई आईएएस और डॉ. पी.जी. राव के साथ प्रतिभागी।

नार्थ–ईस्टर्न इंस्टिट्यूट ऑफ फोल्क मेडिसिन (एनईआईएफएम), पासीघाट, अरूणाचल प्रदेश के तत्वावधान में असम में स्थानीय स्वास्थ्य परंपराओं के प्रलेखीकरण और मूल्यांकन पर क्षेत्र अन्वेषकों की एक कार्यशाला सीएसआईआर–एनईआईएसटी द्वारा स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा केंद्र, आयुर्वेद और संघटित औषध संस्थान, फाउंडेशन फॉर रिवाईटेलाईजेशन ऑफ लोकल हैल्थ ट्रैडिशंस (एफआरएलएचटी), बैंगलौर के सहयोग से 12–19 दिसंबर, 2011 को आयोजित की गई । कार्यशाला का उद्घाटन, सत्र के मुख्य अतिथि श्री ओटेम दाई, आईएएस, निदेशक, एनईआईएफएम, पासीघाट ने किया । डॉ. एस.सी. नाथ, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी एवं कार्यक्रम समन्वयक ने स्वागत भाषण दिया । श्री ओटेम दाई ने अपने उद्घाटन संभाषण ने एनईआईएफएम के उद्देश्य और इसके कार्यकलापों के बारे में बताया । सम्मानित अतिथि श्री जी. हरी राम मूर्ति, सहायक निदेशक, एफआरएलएचटी, बैंगलौर, ने कार्यक्रम के उद्देश्य का उल्लेख किया । डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की । उन्होंने असम और उत्तर–पूर्व भारत में संस्थान द्वारा प्रस्तावित विशेष कार्य हेतु एनईआईएफएम, पासीघाट के प्रयासों की सराहना की । उन्होंने रोगोपचारक कारकों के समाधान और निरूपण हेतु फोल्कलोर औषधीय पौधों की रसायन जांच और आवश्यक फोल्कलोर दावों की विधिमान्यता के लिए एनईआईएफएम

द्वारा सीएसआईआर–एनईआईएसटीके साथ हाथ मिलाने का स्वागत किया । इस सत्र का, डॉ. एस.पी. सैकिया, वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात समापन हुआ । उद्घाटन सत्र के पश्चात पांच तकनीकी सत्र हुए जिनमें एफआरएलएचटी, बैंगलौर के स्रोत व्यक्ति, एनईआईएफएम, पासीघाट, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, जोरहाट और लोली जीयोटैक एंड एसोसिएट्स, नागालैंड, वन एवं सजातीय गांवों में क्षेत्र दौरे, गैर–सरकारी संगठनों के अनुसंधान व विकास केंद्र जैसे भारतीय परंपरागत उपचार पर क्षेत्रीय अनुसंधान व प्रशिक्षण केंद्र, गोलाघाट, संवाद, प्रदर्शन, औषधीय जड़ी–बूटियां और हर्बल उत्पाद, सजातीय समाजों एवं ग्रामीणों की स्थानीय स्वास्थ्य परंपराओं का प्रलेखीकरण और मूल्यांकन पर चर्चा शामिल है। कार्यक्रम में संबंधित सहभागियों सहित लोकधारित औषधियां निर्धारित करते हुए पारंपरिक नीरोगक और अनेक गैर–सरकारी संगठन शामिल हुए । डॉ. आर.सी.बरूआ, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी के 19 दिसंबर, 2011 को विदाई सत्र की अध्यक्षता की, जिसके साथ कार्यशाला का समापन हुआ । डॉ. बोरूआह ने वर्तमान समय में लोकाधारित एवं पारंपरिक औषधियों के बढ़ते महत्व को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार की कार्यशाला के आयोजन के बारे में बताया । उन्होंने विभिन्न स्थानों से आए प्रतिभागियों को उनकी कार्यशाला में उनकी रूचि और सक्रिय सहभागिता के लिए प्रसन्नता व्यक्त की । डॉ. एस.सी. नाथ, कार्यक्रम संयोजक ने आयोजित समग्र कार्यक्रम की विशेषताएं संक्षेप में बताई । प्रतिभागियों ने कार्यशाला पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए प्रसन्नता व्यक्त की और कार्यशाला में उन्हें आमंत्रित करने के लिए सीएसआईआर–एनईआईएसटी का आभार प्रकट किया । स्थानीय स्वास्थ्य परंपराओं को वैज्ञानिक व अर्थपूर्ण तरीके से आगे बढ़ाने के लिए एक लोकाधारित नीरोगक की एसोसिएशन नामतः ''फोल्क मेडिसिन प्रैक्टिशनर्स एसोशिएशन, असम'' का गठन किया गया ।

उत्तर–पूर्व क्षेत्र के लिए सिविल संरचना प्रौद्योगिकियों पर आयोजित कार्यशाला

प्रोफेसर डी.वी. सिंह (केंद्र), डीएसटी विशेषज्ञ, नई दिल्ली उद्घाटन सत्र में संभाषण करते हुए । डॉ. आर.सी. बोरूआह, उत्कृष्ठ वैज्ञानिक व निदेशक–प्रभारी और प्रोफेसर डी.एन. त्रिखा, डीएसटी विशेषज्ञ बायें और दाएं क्रमशः में । (दाएं) कार्यशाला प्रगति में ।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने ''उत्तर–पूर्व क्षेत्र के लिए सिविल संरचना प्रौद्योगिकियां'' पर अपने परिसर में 28–29 फरवरी, 2012 को दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा समर्थित थी । प्रोफेसर डी.वी. सिंह, डीएसटी, नई दिल्ली की अध्यक्षता में एम.एस. अयंगर हाल में हुए उद्घाटन सत्र में इजी. के.जी. देब करोरी, मुख्य सलाहकार, जल और विद्युत परामर्शी सेवा (डब्ल्यूएपीसीओएस), भारत सरकार का एक उपक्रम, ने लीड वक्ता के रूप में भाग लिया । अन्य उपस्थित ख्याति प्राप्त डीएसटी कार्मिकों में प्रोफेसर डी.एन. त्रिखा और श्री राजीव शर्मा थे । सीएसआईआर–एनईआईएसटी वैज्ञानिक परिवार के अलावा, इस सत्र में भारतीय औद्योगिक संस्थान–गुवाहाटी, उत्तर–पूर्व क्षेत्रीय जल और भूमि प्रबंधन संस्थान–तेजपुर, उत्तर–पूर्व क्षेत्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान–अरूणाचल प्रदेश, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान–सिलचर और बंगाल इंजीनियरिंग एंड साइंस यूनिवर्सिटी–शिबपुर, कोलकाता के 30 कार्मिकों ने हिस्सा लिया । श्री पी. बारकाकती, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक और कार्यशाला के प्रधान समन्वयक ने अपने उद्घाटन समारोह में कार्यशाला और इसके उद्देश्य पर प्रकाश डाला । डॉ. आर.सी. बरूआ, उत्कृष्ट वैज्ञानिक और निदेशक–प्रभारी, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने विशेषज्ञता के आदान–प्रदान के जरिए समस्याओं का समाधान प्रदान करने हेतु क्षेत्र के सिविल एरिया में वर्तमान संरचनात्मक सुविधाओं, जिनपर इस प्रकार के फोरम में चर्चा करने की आवश्यकता है, ऐसी कार्यशाला के आयोजन की आवश्यकता

पर बल दिया । डॉ. बोरूआह ने विगत पांच दशकों में संस्थान और इसके कार्यकलापों के बारे में उपस्थित समूह को बताया । दो दिवसीय कार्यशाला में सिविल संरचना और इसके वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उत्तर–पूर्व क्षेत्र से संबंधित विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की गई । स्वागत भाषण के पश्चात् ''समृद्ध भारत के प्रति भारत के उत्तर–पूर्व क्षेत्र के संदर्भ में इंजीनियरों के समक्ष चुनौतियां'' पर इजी. के.जी. देब कोरी ने मुख्य वक्तव्य दिया । अपने भाषण में इजी. कोरी ने आवास क्षेत्र, सड़क निर्माण, पुल, बांध, फ्लाईओवर, परिवहन और संचार सेवाओं में सिविल इंजीनियरी संरचना पर विस्तृत विहंगम दृष्टि डाली । इजी. कोरी ने विभिन्न इंजीनियरी कार्यों और विभिन्न उन्नत प्रौद्योगिकियों में वित के प्रभावी प्रबंधन हेतु कुछ उपायों पर भी सुझाव दिए जिन्हें राज्य सरकार सिविल संरचना परिप्रेक्ष्य में सुधार लाने के लिए अपना सकती है । यह उल्लेख किया जाता है कि इससे पूर्व श्री एस. दिओरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने श्रोताओं के समक्ष वक्ता का संक्षिप्त परिचय दिया । दो दिवसीय कार्यशाला के चार सत्रों में विचारों का मंथन हुआ जिसमें विभिन्न संस्थानों के प्रतिभागियों ने अपने अवधारण पेपर प्रस्तुत किए । शहरी आवास, सड़क परिवहन, पुल व ढांचे, सिविल इंजीनियरी निर्माण सामग्री और ऊर्जा कुशल निर्माण के पांच उप–समूहों के गठन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ । कार्यशाला में क्षेत्र की सहायक संस्थानों के सहयोग एवं नेटवर्किंग पर जोर देते हुए परियोजना प्रस्ताव भी आमंत्रित किए गए।

सीएसआईआर और टीएससीएसटी ने संयुक्त रूप से ''सीएसआईआर की ग्रामीण प्रौद्योगिकियों पर प्रदर्शन व कार्यशाला'' आयोजित की।

श्री जोय गोबिंदा देबराय, माननीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री, त्रिपुरा सरकार उद्घाटन समारोह में उद्गार व्यक्त करते हुए। मंच पर आसीन (दाएं से) डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी और श्री एम.एल. राव, सदस्य उप–सचिव, टीएससीएसटी

सीएसआईआर–आईएमएमटी कार्मिक बॉयोमास ड्रायर पर प्रदर्शन में भाग लेते हुए

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने नोडल सीएसआईआर प्रयोगशाला के रूप में त्रिपुरा विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य परिषद (टीएससीएसटी), त्रिपुरा सरकार के सहयोग से राज्य लोक प्रशासन और ग्रामीण विकास (एसआईपीएआरडी), अगरतला, त्रिपुरा में 2–3 फरवरी, 2012 को दो दिवसीय ''सीएसआईआर द्वारा ग्रामीण प्रौद्योगिकियों पर विकसित प्रदर्शन व कार्यशाला'' का आयोजन किया । सीएसआईआर की अन्य प्रयोगशालाओं में सीएसआईआर–खनिज तथा पदार्थ प्रौद्योगिकी संस्थान, भुवनेश्वर; सीएसआईआर–केंद्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान, चेन्नई और सीएसआईआर–केंद्रीय यांत्रिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर ने दो दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया । कार्यशाला का लक्ष्य प्रदर्शनी और उपयुक्त प्रदर्शन के जरिए सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों पर जागृति प्रदान करना और बेरोजगार युवाओं और महिला स्वयं सहायता समूहों के लाभार्थ उनका प्रसार करना था । कार्यशाला में त्रिपुरा के विभिन्न जिलों से विभिन्न स्वयं सहायता समूहों, गैर–सरकारी संगठनों, बेरोजगार युवाओं और स्थानीय उद्यमियों के 74 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया । कार्यशाला का प्रारंभ डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी के संबोधन से हुआ । संगोष्ठी हाल, एसआईपीएआरडी

में आयोजित कार्यशाला में डॉ. राव ने अपने अभिभाषण में कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में प्रतियोगियों को बताया और सीएसआईआर की कुछ ग्रामीण प्रौद्योगिकियों, जिनमें ग्रामीण लोगों की आर्थिक स्थिति सुधारने की क्षमता है, के बारे में परिज्ञान दिया । उन्होंने सीएसआईआर 800 कार्यक्रम का भी उल्लेख किया जिसका लक्ष्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप के जरिए भारत के 800 मिलियन लोगों के जीवन में सुधार लाना है । तत्पश्चात् सीएमइआरआई, दुर्गापुर और आईएमएमटी, भुवनेश्वर के कार्मिकों ने तकनीकी व्याख्यान दिए जिनमें उनकी प्रमाणित ग्रामीण प्रौद्योगिकियों के जरिए सामाजिक कार्यकलापों पर चर्चा की गई । यह उल्लेख किया जाता है कि बाद में कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन अपराहन में श्री जोय गोबिंदा देबरॉय, माननीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री, त्रिपुरा सरकार ने मुख्य अतिथि के रूप में संगोष्ठी हाल में किया । समारोह में उपस्थित विख्यात व्यक्तियों में श्री बनमाली सिंहा, प्रधान सचिव, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण, त्रिपुरा सरकार, श्री पी. बिस्वास, निदेशक, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण, त्रिपुरा सरकार, श्री एम.एल. रोय, सदस्य उप–सचिव, टीएससीएसटी और डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी के अतिरिक्त सीएसआईआर और टीएससीएसटी कार्मिक और प्रतिभागी थे । श्री पी. बिस्वास ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम की आवश्यकता न केवल जागरूकता करने बल्कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी का लाभ आम आदमी तक पहुंचाने के लिए है । श्री एम.एल. रोय ने श्रोताओं को संबोधित करते हुए इसकी आवश्यकता बताई । समारोह में बोलते हुए श्री देबरॉय ने प्रतिभागियों को कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाने का आग्रह किया । उन्होंने निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी से त्रिपुरा में आउटरीच केंद्र स्थापित करने का अनुरोध किया ताकि बहुतायत में लोगों को लाभ प्राप्त हो सके । डॉ. पी.जी. राव ने अपने संबोधन में इस विशेष कार्यशाला के आयोजन करने हेतु सीएसआईआर–एनईआईएसटी के जरिए सीएसआईआर के साथ हाथ मिलाने के लिए टीएससीएसटी, त्रिपुरा सरकार का आभार प्रकट किया । उन्होंने सरकार से बेरोजगार युवकों और महिलाओं के लाभार्थ उद्यमिता विकास पर अधिक जोर देने की अपील की । उन्होंने यह भी कहा कि सीएसआईआर–एनईआईएसटी भविष्य में इस प्रकार की कार्यशालाओं को आयोजन में पूर्ण सहयोग देने के लिए तैयार है और मुख्य अतिथि द्वारा त्रिपुरा में पहुंच केंद्र स्थापित करने की अपील का भी समन्वय कर सकती है।

डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर – एनईआईएसटी ने 3 फरवरी, 2012 को सीएसआईआर–एनईआईएसटी द्वारा विकसित कुछ ग्रामीण प्रौद्योगिकियां नामतः केले का फाइबर निकालने की प्रक्रिया, तरल गंधहारक मार्जक, न्यून धूल चाक पैंसिल, दलहन भंडारण ढांचे आदि पर विस्तृत प्रस्तुति दी जबकि डॉ. ए.के. बोर्डोलोई, प्रधान

सीएसआईआर–एनइआईएसटी कार्मिक मशरूम खेती पर प्रतिभागियों को प्रदर्शन देते हुए।

तकनीकी अधिकारी, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने मशरूम खेती तकनीक के बारे में बताया ।

इस दो दिवसीय कार्यशाला में तकनीकी सत्रों और प्रतिभागी सीएसआईआर प्रयोगशाला के कार्मिक द्वारा बायोमास ड्रायर, ऊर्जा कुशल न्यून लागत बेकरी ओवन, टेराफिल वाटर फिल्टर, हैंड पंप एटैचेबलल आयरन रिमूवल प्लांट, चर्म से हैंड बैग, न्यून धूल चाक पैंसिल, केले के तने से फाइबर निकालने और मशरूम खेती पर व्यवहारिक प्रतिपादन किया । प्रत्याशियों ने इन प्रौद्योगिकियों के महत्वपूर्ण पहलुओं को नोट किया और उनके बनाने की विभिन्न प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया । कार्यशाला का समापन 3 फरवरी, 2012 को संक्षिप्त विदाई भाषण के साथ हुआ जिसमें श्री पी. बिस्वास, निदेशक, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण, त्रिपुरा सरकार, श्री एम एल रॉय, सदस्य उपसचिव, टीएससीएसटी और डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी सहित प्रतिभागी और सीएसआईआर और टीएससीएसटी के कार्मिक शामिल हुए । समारोह में प्रतिभागियों ने कार्यशाला के बारे में अपने अनुभव और इसकी समग्र गतिविधियों का आदान–प्रदान किया । एक प्रतिभागी श्री आशुतोष पाल और केला फाइबर के एक उद्यमी को अपना उत्पाद विभिन्न सरकारी एम्पोरियम के बिक्री केंद्रों में विपणन करने के कुछ सुझाव दिए गए । श्री पी. बिस्वास ने विकसित, अंतरित और अंतरण के लिए उपलब्ध विभिन्न महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों की सराहना की और प्रतिभागी उद्यमियों से उपलब्ध सीएसआईआर प्रौद्योगिकियां उपयोग करने का अनुरोध किया । श्री एम एल राय ने कार्यशाला के प्रतिभागियों की सक्रिय सहभागिता और हस्तक्षेप की सराहना की । विभिन्न स्वयं–सहायता समूहों, गैर–सरकारी संस्थानों, बेरोजगार युवाओं और स्थानीय उद्यमियों के 74 प्रतिभागियों ने प्रौद्योगिकियां सीखने में रूचि और उत्साह दिखाया । प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के बारे में उपयुक्त प्रतिक्रिया प्रपत्र में अपनी प्रतिक्रियाएं दीं ।

हैजार्ड पर क्षेत्र स्तरीय कार्यशाला आयोजित

(बायें) श्री एम रहमान, कार्यशाला के समन्वयक अपना तकनीकी व्याख्यान देते हुए। (दाएं) प्रतिभागी।

प्राकृतिक आपदाओं के बारे में जागरूकता पैदा करने और तैयारी करने के प्रयोजन से सीएसआईआर– एनईआईएसटी ने ''दुमदुमा कालेज, रूपाई डिडिंग, जिला–तिनसुखिया, असम के साथ मिलकर 3–4 जनवरी, 2012 के दौरान क्षेत्रीय स्तर पर'' हैजार्ड्स–न्यूनतम जोखिम, अधिकतम जागरूकता'' पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जिसे आरवीपीएसपी, डीएसटी, नई दिल्ली का समर्थन मिला । मेजर गीता गोस्वामी, लेक्चरर, दुमदुमा कालेज ने 3 जनवरी, 2012 को इसके उद्घाटन समारोह में स्वागत भाषण दिया जबकि श्री अरूण हलोई, वरिष्ठ लेक्चरर, दुमदुमा कालेज ने कार्यशाला और इसके उद्देश्य के बारे में बताया । कार्यशाला का उद्घाटन दुमदुमा कालेज के प्रधानाचार्य–प्रभारी डॉ. अरूणा गोगोई बरूआ ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया । कार्यशाला में महत्वपूर्ण सुरक्षा उपायों पर तकनीकी और व्यवहारिक प्रदर्शन हुए । डॉ. पी.के बोरा, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक सीएसआईआर–एनईआईएसटी, डॉ जतिन कालिता, कनिष्ठ वैज्ञानिक, एसीएसआई–एनईआईएसटी, श्री एम. रहमान, तकनीकी अधिकारी, सीएसआईआर–एनईआईएसटी और कार्यशाला के समन्वयक श्री नभजीत गोस्वामी, विद्यार्थी, एनआईटी–सिलचर और डॉ. नवज्योति गोगोई, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, दुमदुमा ने व्याख्यान दिए । डॉ. बोरा ने भूकंप आपदा के प्रबंधन के विशेष संदर्भ में भूकंप विज्ञान के बारे में बताया । श्री गोस्वामी ने आपदा और इसके प्रभाव को न्यूनतम करने के सिद्धांतों के बारे में विस्तृत व्याख्या की । श्री एम. रहमान ने भूकंप प्रबंधन पर वार्ता की । मोहम्मद इलताब हुसैन, अग्नि स्टेशन अधिकारी, दुमदुमा ने अग्नि आपदा के बारे में व्याख्यान दिया और अपने सहयोगियों के साथ प्रदर्शन किया । डॉ. कालिता ने रसायन हैजार्ड पर व्याख्यान दिया और पौधों एवं जोती हुई भूमि पर कीटनाशक, फफूंदनाशक, उर्वरक आदि के प्रयोग के समय लिए जाने वाले महत्वपूर्ण एहतियाती उपायों का उल्लेख किया । श्री रूपांता सोनोवाल, वायरलैस प्रचालक और प्रदर्शक, नागरिक सुरक्षा, दुमदुमा ने अपने सहयोगियों के साथ आपदा के बाद, बचाव कियाकलाप के दौरान अपनाई जाने वाली विभिन्न तकनीकों पर प्रस्तुति दी । डॉ. नवज्योति गोगोई ने अपनी वार्ता में आपदा उपरांत शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए विभिन्न प्राथमिक उपचारों के बारे में बताया । कार्यशाला का समापन 4 जनवरी, 2012 को हुए लघु विदाई समारोह के साथ हुआ जिसमें डॉ. पी.सी. नियोग, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी और कार्यशाला के प्रधान समन्वयक ने दिसंबर, 2006 से असम के विभिन्न स्थानों पर संस्थान द्वारा आयोजित विगत कार्यशालाओं की व्याख्या की । उन्होंने सूचित किया कि संस्थान ने अब तक ऐसी 18 कार्यशालाओं का आयोजन किया है जिनमें प्राकृतिक आपदाओं और इनके प्रभाव को न्यूनतम करने के बारे में 5000 से अधिक व्यक्तियों को सुग्राही बनाया गया । समारोह की अध्यक्षता करते हुए सुश्री बीना देवी बोरडोलाई, वरिष्ठ लैक्चरर, दुमदुमा कालेज ने दुमदुमा के आम आदमियों के हितार्थ इस प्रकार की महत्वपूर्ण कार्यशाला के आयोजन की प्रशंसा की । समारोह में सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए । इस कार्यशाला में दुमदुमा और आसपास के 70 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया ।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी और सीएसआईआर–सीआरआरआई द्वारा उत्तर–पूर्व क्षेत्र हेतु संयुक्त रूप से आयोजित दीर्घकालिक सड़क प्रौद्योगिकियों पर कार्यशाला

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने सड़क अनुसंधान हेतु नोडल निकाय सीएसआईआर–सीआरआरआई, नई दिल्ली के साथ संयुक्त रूप से लोक निर्माण विभाग, त्रिपुरा सरकार के सहयोग से व बिटकैम, गुवाहाटी द्वारा प्रायोजित ''उत्तर–पूर्व क्षेत्र के लिए सड़क प्रौद्योगिकियां'' पर 4–5 फरवरी, 2012 को प्राग्ना भवन, अगरतला, त्रिपुरा में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया । कार्यशाला का उद्घाटन 4 फरवरी, 2012 को सेमिनार हाल, प्राग्ना भवन में हुआ जिसमें श्री सुनील भौमिक, मुख्य अभियंता (सड़क), त्रिपुरा सरकार, डॉ. एस गंगोपाध्याय, निदेशक, सीएसआईआर–सीआरआरआई और डॉ. पी. जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी के अलावा

सीएसआईआर के वैज्ञानिक और लोक निर्माण विभाग, त्रिपुरा सरकार के अधिकारी बहुतायत में उपस्थित हुए। डॉ. पी.जी. राव ने अपने संबोधन में कहा कि उत्तर–पूर्वी क्षेत्र पहाड़ी और पर्वतीय इलाका है और समतल इलाके की तुलना में पहाड़ी इलाके में सड़क निर्माण अलग, अति–दुष्कर और काफी महंगा है। डॉ. राव ने नव प्रवर्तन लाने और सड़कों के तीव्र और चिरस्थायी निर्माण हेतु नवप्रवर्तन और नई प्रौद्योगिकियों की महत्ता पर जोर डाला। डॉ. एस गंगोपाध्याय, निदेशक, सीएसआईआर–सीआरआरआई ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए उत्तर–पूर्व क्षेत्र की विशिष्ट पहाड़ी, शीत अथवा बरसाती परिस्थितियों के लिए अनुकूल, सड़क निर्माण हेतु, उपलब्ध पर्यावरणीय–अनुकूल एवं वहनीय प्रौद्योगिकियों के बारे में उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि ऐसी प्रौद्योगिकियों के बारे में उल्लेख किया । उन्होंने कहा कि ऐसी प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से ग्रामीण संयोजकता में वृद्धि होना अनिवार्य है। उन्होंने यह भी बताया कि सीआरआरआई पूरे देश में सड़क निर्माण में नवीन व वहनीय प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर संघर्ष कर रही है और हाल में ही संस्थान ने उत्तर–पूर्व में कोल्ड मिस्क इमल्शन की आपूर्ति करने के लिए एकमात्र लाइसेंस अंतरित किया है। यहां यह उल्लेख किया जाता है कि भारत में कोल्ड मिक्स प्रौद्योगिकी लागू करने और वाणिज्यिकरण करने में बिटकैम अगुआ है।

श्री सुनील भौमिक, मुख्य अभियंता (सड़क), त्रिपुरा सरकार ने

डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर– एनईआईएसटी, उद्घाटन सत्र में संभाषण करते हुए ।

ग्रामीण समृद्धता में वृद्धि करने हेतु सड़क निर्माण में तेजी लाने की आवश्यकता पर बल दिया। तत्पश्चात् कार्यशाला के तीन तकनीकी सत्र हुए जिनमें उत्तर–पूर्व क्षेत्र हेतु ग्रामीण सड़कें, इमलशन एवं कोल्ड मिक्स प्रौद्योगिकियां, वार्म मिक्सिज, माइक्रोसर्फेसिंग, पर्यावरण और सड़क निर्माण के कानूनी पक्षों आदि पर विचार–विमर्श किया गया। कोल्ड मिक्स प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर एक व्यावहारिक निरूपण 5 फरवरी, 2012 को दिया गया। इस कार्यशाला में विभिन्न सरकारी विभागों और प्राइवेट एजेंसियों के 150 से अधिक स्थानीय इंजीनियरों और अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

चाय और कोश–कृमि पालन पर विचार–मंथन सत्र

सीएसआईआर–एनईआईएसटी, एआरडीए–थाइलैंड और द क्वीन सिरिकिट डिमार्टमेंट ऑफ सेरीकल्चर एंड टी इंस्टीट्यूट, माई फाह लुआंग यूनिवर्सिटी, थाइलैंड के बीच चाय और कोशकृमि–पालन पर 20 मार्च, 2012 को डॉ. एम.एस.आयंगर हाल में एक विचार–मंथन सत्र का आयोजन किया गया । डॉ. पीराडेट टोंगूमपाई, निदेशक, एग्रीकल्चर रिसर्च डेवलपमेंट एजेंसी, बैंकाक, थाइलैंड की अगुवाई में थाइलैंड से प्रतिनिधियों की एक टीम जिसमें श्री परासेर्ट गोसालवित्रा, महा निदेशक, द क्वीन सिरिकिट डिपार्टमेंट ऑफ सेरीकल्चर; सुश्री ओराटाई सिलापान, उप महा निदेशक द क्वीन सिरिकिट डिपार्टमेंट ऑफ सेरीकल्चर, डॉ. थीरापोंग थेप्पाकोर्न, निदेशक, टी इंस्टीट्यूट, माई फाह लुआंग यूनिवर्सिटी, मिस मुल्लिका कुलसिरिप्रूक, विदेश संपर्क अधिकारी, एआरडीए; श्रीसारीडीपोर्ने चुपरायून, निदेशक, द क्वीन सिरिकिट डिपार्टमेंट ऑफ सेरीकल्चर और श्री सोमपोल निल्ला वेसना, कृषि विभाग के विशेषज्ञ शामिल हुए ।

दूसरी ओर से प्रतिनिधियों में डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, जैव–प्रौद्योगिकी प्रभाग के वैज्ञानिक और अनुसंधानकर्त्ता, औषधीय, सुगंधित और आर्थिक पौधे प्रभाग, रसायन इंजीनियरी प्रभाग और सूचना व व्यापार विकास प्रभाग शामिल थे । सत्र में टी रिसर्च एसोसिएशन टोकलाई के प्रतिनिधि भी चाय विशेषज्ञ के रूप में शामिल हुए । डॉ. आर.सी. बरूआ, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने स्वागत भाषण दिया और सीएसआईआर–एनईआईएसटी के कार्यकलापों की व्याख्या की । डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने घटनाओं की श्रृंखला का परिचय

विचार–विमर्श सत्र प्रगति में

दिया जिनमें सीएसआईआर–एनईआईएसटी के बीच 2011 में समझौता–ज्ञापन हस्ताक्षरित हुआ । विचार–मंथन सत्र में चाय और कोशकृमि पालन से संबंधित विभिन्न विषयों पर उच्चाधिकारियों द्वारा तकनीकी व्याख्यान दिए गए । डॉ. पीराडेट टोंगुमपाई ने कहा कि दोनों राष्ट्रों के बीच दीर्घकालिक विकास हेतु दोनों संस्थानों के बीच वैज्ञानिक कार्यकलापों की यह शुरूआत है । इस संबंध में उन्होंने कहा कि चाय और कोशकृमि–पालन क्षेत्रों में आंकड़ों और मानवशक्ति के प्रशिक्षण के विनिमय पर जोर दिया । इसके अलावा, थाईलैंड की कृषि जलवायु परिस्थितियों, जो उत्तर–पूर्व क्षेत्र के समान हैं, में कार्यकलापों को प्रोत्साहित करेगा । श्री परासर्ट गोसालविट्रा ने शहतूत और कोशकृमि–पालन और रेशम कीड़े कि जर्मप्लाज्म के संरक्षण पर क्वीन सिरिकिट, डिपार्टमेंट ऑफ सेरीकल्चर पर रोशनी डाली । डॉ. थीरापोंग थेप्पाकोर्न, ने चाय अनुसंधान और अलोंगे चाय और हरित चाय के चाय परीक्षण और चाय के डीएनए फिंगर प्रिंटिंग में सहयोग पर जोर दिया । श्री सोमपोल निल्लावेसना ने जंगली क्षेत्रों से एकत्रित नई चाय की किस्मों में सुधार लाने और जलवायु परिवर्तन के कारण चाय की किस्मों में परिवर्तन का निरीक्षण करने के लिए चाय की कृषि–जलवायु विविधता पर सहयोगी अध्ययन की बात कही । श्री एन सी गोगोई, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, ने सूचित किया कि चाय पत्तियों से पोलीफिनोलस निकालने की प्रौद्योगिकी सीएसआईआर–एनईआईएसटी में उपलब्ध है । उन्होंने यह भी सूचित किया कि प्रक्रिया हरित चाय और ताजा पत्तियों के लिए उपयुक्त है जिसमें कम पोलीफिनोलस है । इसके अलावा, उन्होंने कहा कि चाय बीज तेल निष्कर्षण प्रौद्योगिकी भी सीएसआईआर–एनईआईएसटी के पास उपलब्ध है ।

डॉ. बी.जी. उन्नी, प्रमुख वैज्ञानिक ने कोशकृमि–पालन पर चर्चा करते हुए उन्होंने कोशकृमि–पालन अनुसंधान, कोशकृमि–पालन अनुसंधान बेहतर बनाने हेतु सहयोग के लिए भावी कार्यक्रम में सीएसआईआर–एनईआईएसटी के योगदान के साथ भारत में ईरी कोशकृमि–पालन अनुसंधान व विकास कार्यकलापों के वर्तमान परिप्रेक्ष्य और विस्तृत चर्चा की और प्यूपा अपव्यय से तेल निष्कासन हेतु प्रौद्योगिकी का भी उल्लेख किया । डॉ. पी.आर. भट्टाचार्य, अध्यक्ष–औषधीय सुगंधित व आर्थिक पौध प्रभाग ने कहा कि प्रजनन की उच्च क्षमता सहित प्रजनन की तकनीक में बेहतर पोषक पौधें के चयन और बेहतर प्रजनन तरीकों से सुधार किया जा सकता है जो जीओ–ट्रोपिकल परिस्थितियों पर आधारित है ।

कार्यशाला का समापन सहयोग के अंतर्गत निम्नलिखित भावी कार्रवाई योजनाओं के साथ हुआ –

1. थाईलैंड के कार्मिकों को चाय के डीएनए फिंगरप्रिंटिंग पर प्रशिक्षण देना।
2. चाय और चाय परीक्षण के जैव–रासायनिक और रसायन विश्लेषण।
3. रोग का अणुजीव नियंत्रण और चाय में सुधार, पोलीफिनोलस का निष्कासन।
4. दोनों देशों के वैज्ञानिकों का व्याख्यान देने और अनुसंधान के विशिष्ट क्षेत्रों से संबंधित तकनीकों से परिचय कराने हेतु आदान–प्रदान।
5. चाय और अन्य क्षेत्रों से संबंधित भूमंडलीय तापन अध्ययनों पर अनुसंधान के सहयोग का प्रतिपादन।
6. बेहतर पोषक पौधों, रेशमकीड़ों को पालने की तकनीकों और समान रूचि के अन्य क्षेत्रों में थाईलैंड के कार्मिकों को प्रशिक्षण देना।
7. रोग नियंत्रण और व्यवहार्यता अध्ययनों के आधार पर कोशकृमि–पालन की कच्ची सामग्री में विशेषता वृद्धि के क्षेत्रों में सहयोगी परियोजनाएं बनाना।

विशिष्ट मानव संसाधन विकास

उत्कृष्ट अ.जा./अ.ज.जा. विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार की सीएसआईआर योजना :

सीएसआईआर–नई दिल्ली ने तेजस्वी एससी/एसटी विद्यार्थियों को +2/जूनियर कॉलेज स्तर पर विज्ञान पढ़ने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए नगद पुरस्कार योजना लागू की है। यह सर्वविदित है कि शिक्षा किसी के भी विकास में पोषक का काम करती है। अतः इस दिशा में प्रोत्साहन के जरिए विद्यार्थियों को प्रेरित करने से एससी/एसटी विद्यार्थियों के विकास की प्रक्रिया में तेजी आएगी और उनका समुदाय राष्ट्र निर्माण में अपना सहयोग देगा।

योजना को कार्यान्वित करने के लिए प्रभाग ने उत्तर–पूर्व राज्यों की राज्य सरकार प्राधिकारियों से मेधावी एससी/एसटी विद्यार्थियों को कार्यक्रम में नामित करने के लिए बातचीत की। कुल 14 मेधावी एससी/एसटी छात्र नामित हुए जिन्होंने उत्तर–पूर्व राज्यों के राज्य बोर्डों से कक्षा दस की परीक्षा उत्तीर्ण की है। विद्यार्थियों को संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं में चल रहे अनुसंधान कार्यों की जानकारी देने के लिए ले जाया गया। विद्यार्थियों को 26 सितंबर, 2011 को हुए समारोह में नगद पुरस्कार के प्रमाण–पत्र दिए गए।

विज्ञान में नेतृत्व हेतु युवाओं पर सीएसआईआर कार्यक्रम (सीपीवाईएलएस)

मौलिक और सैद्धांतिक विज्ञान में अनुसंधान के क्षेत्र में प्रतिभावन वैज्ञानिक जनशक्ति की एक निकाय बनाने की दीर्घकालिक युक्ति आयोजना के हिस्से के रूप में सीएसआईआर ने ''विज्ञान में नेतृत्व हेतु युवाओं पर सीएसआईआर कार्यक्रम (सीपीवाईएलएस) कार्यक्रम'' की शुरूआत की। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को भावी विज्ञान संबंधी नेतृत्व में उन्हें रूपांतरित करके स्कूल व कॉलेज के दैनिक कार्यक्षेत्र के परे अवसर प्रदान करके युवाओं को प्रेरित करना और सशक्त बनाना है। कार्यक्रम से युवाओं में पुष्ट विचार, कौशल और प्रगतिशील प्रतिमान, नेतृत्व विशेषताएं और वैज्ञानिक चिंतन और विवके आएगा।

प्रभाग ने सीपीवाईएलएस की 2011 में विभिन्न गतिविधियों को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया। पहले कदम के रूप में प्रभाग ने सीपीवाईएलएस हेतु मेधावी छात्रों के चयन के लिए उत्तर–पूर्वी राज्यों के राज्य सरकार प्राधिकारियों और एचआरडीजी, सीएसआईआर से संपर्क किया। आठ राज्यों के 162 सर्वोच्च विद्यार्थियों को मेरिट के अनुसार 'दो दिवसीय' कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया गया। 93 विद्यार्थियों ने अपने माता–पिता/अध्यापकों/अभिभावकों के साथ सहभागिता की पुष्टि की और अंततः संस्थान में 14–15 दिसंबर, 2011 के दौरान आयोजित कार्यक्रम में 69 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

डॉ. एस. सुधाकर, निदेशक, उत्तर–पूर्व अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (एनईएसएसी), यूमिएम, मेघालय उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे। डॉ. सुधाकर ने अपने प्रेरणादायक अभिभाषण में प्राकृतिक आपदाओं को न्यूनतम करने में एनईएसएसी की भूमिका के बारे में बताया और विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। उद्घाटन सत्र में डॉ. पी.जी. राव, संस्थान के निदेशक ने विद्यार्थियों को वैज्ञानिक चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित किया । कार्यक्रम के कार्यकलाप थे : लोकप्रिय वैज्ञानिक व्याख्यान, साधारण किट और रसायनों को प्रयोग करके प्रदर्शन–व–व्याख्यान, प्रयोगशालाओं का भ्रमण, विद्यार्थी–वैज्ञानिक भेंट, प्रायोगिक प्रशिक्षण, अर्ध–आशु भाषण प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि।

विदाई समारोह संस्थान के डॉ.जे.एन.बरूआ सभागार में 15 दिसंबर, 2011 को अपराह्न में आयोजित किया गया। डॉ. एन सी बरूआ, प्रमुख वैज्ञानिक व निदेशक–प्रभारी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ. एल. नाथ, सीपीवाईएलएस के समन्वयक ने कार्यक्रम की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। कार्यक्रम के दौरान उत्तर–पूर्व क्षेत्र के प्रत्येक राज्य से एक विद्यार्थी और एक सहचर से सीपीवाईएलएस कार्यक्रम से उनकी अपेक्षाओं पर और संस्थान में उनके आवास के

दौरान हुए अनुभवों पर कुछ शब्द बोलने का अनुरोध किया गया। विद्यार्थियों और सहचरों ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और संस्थान एवं कार्यक्रम के आयोजकों को सभी कार्यक्रमों मे उत्कृष्ट प्रबंध करने के लिए धन्यवाद दिया।

डॉ. बरूआ ने अर्ध–आशु भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार और सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों को सहभागिता के प्रमाणपत्र दिए। तदुपरांत विद्यार्थियों द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। विद्यार्थियों ने गानों, नृत्य आदि की प्रस्तुति की । कार्यक्रम के एक हिस्से के रूप में आठ राज्यों के 69 प्रतिभागी विद्यार्थियों में से मेरिट के आधार पर 13 विद्यार्थियों को उनकी रूचि के अनुसार सीएसआईआर की दो प्रयोगशालाओं का दौरा करने के लिए चुना गया और उनके नाम एचआरडीजी, सीएसआईआर को भेजे गए।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी द्वारा विद्यार्थियों के लिए आयोजित अभिप्रेरक कार्यक्रम

(बाएं) डॉ. आर.सी.बरूआ, उत्कृष्ट वैज्ञानिक उद्घाटन सत्र में अभिभाषण करते हुए (दाएं) संस्थान के विभिन्न प्रभागों में अपने दौरे के दौरान सीएसआईआर–एनईआईएसटी के वैज्ञानिकों के साथ संवाद करते हुए विद्यार्थी

विद्यार्थियों को मौलिक विज्ञान के क्षेत्र में जीविका बनाने के लिए आकर्षित और प्रेरित करने के प्रयोजन से सीएसआईआर – एनईआईएसटी, जोरहाट ने उत्तर–पूर्वी क्षेत्र के प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए 19–24 दिसंबर, 2011 के दौरान एक सप्ताह का अभिप्रेरक कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में असम और सिक्किम के विभिन्न हायर सैकेंड्री स्कूलों/कालेजों के 28 विद्यार्थियों और 7 अध्यापकों ने भाग लिया । प्रतिभागी स्कूलों के नाम हैं – जवाहर नवोदय विद्यालय, रोथाक, सिक्किम, पटचरकुची विद्यापीठ हायर सैकेंड्री स्कूल, पटचरकुची, बारपेटा, ज्ञान विज्ञान अकादमी, डिब्रूगढ़, दुमदुमा कालेज, तिनसुखिया, सरूपठार हायर सैकेंड्री स्कूल, गोलाघाट, केंद्रीय विद्यालय, एनईआईएसटी, जोरहाट। उद्घाटन समारोह डॉ. जे. एन. बरूआ सभागार में हुआ जहां सीएसआईआर–एनईआईएसटी परिवार के अतिरिक्त प्रतिभागी विद्यार्थियों और अध्यापकों ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया । कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. आर.सी. बरूआ, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने विद्यार्थियों का स्वागत किया। उन्होंने ऐसे विभिन्न अवसरों और लाभों का उल्लेख किया जो विद्यार्थी कार्यक्रम से ले सकते हैं और उन्होंने उनका पूरा लाभ उठाने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। डॉ. टी.सी. बोरा, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक ने विशेष अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम के आयोजन में अर्न्तनिहित उद्देश्य के बारे में बताया और प्रतिभागियों को लागत प्रभावी और सुगम उपलब्ध प्रौद्योगिकियों के लिए सोचने की सलाह दी । डॉ. पी.सी. नियोग कार्यक्रम के प्रधान समन्वयक ने कार्यक्रम के कार्यक्षेत्र और उत्तर–पूर्वी क्षेत्र के विद्यार्थियों में इसके प्रभाव का उल्लेख किया । तदुपरांत, विद्यार्थियों को प्रयोगशाला में ले जाया गया जहां उन्हें वैज्ञानिक प्रदर्शन दिखाए गए । विद्यार्थियों के 6 समूह बनाए गए और पृथक वैज्ञानिक मार्गदर्शक सहित 6 विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत परियोजना कार्य दिए गए । कार्यक्रम के एक भाग के रूप में डॉ. डी.के. दत्ता, वैज्ञानिक, एनईआईएसटी और डॉ. थुलेस्वर नाथ, एसोशिएट प्रोफेसर, जोरहाट इंजीनियरी कालेज जोरहाट ने ''नैनो विज्ञान और नैनो प्रौद्योगिकी'' और ''एक्समेकर्स गिफ्ट टू ह्युमन सोसायटी'' क्रमशः पर वार्ता प्रस्तुत की । इसके अलावा, विद्यार्थियों ने टोकलाई एक्सपैरिमेंटल स्टेशन, असम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहाट और नुमलीगढ़ के शिबसागर और दियोपहर में विभिन्न जीवमंडल स्थलों और पुरातन इंजीनियरी धरोहर स्थलों का दौरा किया । कार्यक्रम की कुछ विशेषताओं में वक्तृत्व प्रतियोगिता, वैज्ञानिकों के साथ आमना–सामना और सांस्कृतिक सांध्य कार्यक्रम शामिल हैं जो सीएसआईआर–एनईआईएसटी स्टॉफ क्लब, जोरहाट में दिया गया । विदाई समारोह डॉ. एन सी बरूआ, प्रमुख वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ । डॉ. पी. सी.नियोग, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक ने सप्ताह भर आयोजित कार्यक्रम का

ब्यौरा दिया। कार्यक्रम में प्रतिभागी विद्यार्थियों और कुछ माता–पिता/अभिभावकों ने कार्यक्रम के बारे में अपनी प्रतिक्रियाएं दीं जिसमें उन्होंने कार्यक्रम की अत्यंत सराहना की और व्यक्त किया कि कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी था और इससे उनके पूर्वाग्रहों का विस्तार हुआ है। उन्होंने विशेषकर प्रत्येक दिन के प्रत्येक कार्यक्रम की समय–निष्ठा और उन्हें दिए गए आतिथ्य का उल्लेख किया। डॉ. बरूआ ने वक्तृत्व प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरित किए। यहां यह उल्लेख करना भी उचित होगा कि कार्यक्रम राष्ट्रीय विज्ञान प्रौद्योगिकी संचार परिषद (एनसीएसटीसी), विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा उत्प्रेरित और समर्थित था।

संकाय प्रशिक्षण और अभिप्रेरणा और सीएसआईआर प्रयोगशाला द्वारा स्कूलों व कॉलेजों का अंगीरण

क्षेत्र के विद्यार्थियों और अध्यापकों के बीच नवप्रवर्तन रचना निर्माण और अभिप्रेरित करने के प्रयास में प्रभाग ने ''संकाय प्रशिक्षण और अभिप्रेरणा और सीएसआईआर प्रयोगशाला द्वारा स्कूलों व कालेजों का अंगीकरण'' के अंतर्गत इस संस्थान में तीन कार्यशालाओं का सफल आयोजन किया।

पहली कार्यशाला बहोना कॉलेज, जोरहाट; दारंग कॉलेज, तेजपुर; लखीमपुर गर्ल्स कालेज, उत्तरी लखीमपुर; उत्तरी लखीमपुर कालेज, उत्तरी लखीमपुर और केंद्रीय विद्यालय, एनईआईएसटी के संकाय सदस्यों (भौतिक और रसायन–विज्ञान विषयों) के लिए 16–17 नवंबर, 2011 को आयोजित की गई। कालेजों के प्रधानाचार्यों ने रसायन विज्ञान और भौतिकी विभागों के 39 अध्यापकों को नामित किया जिनमें से 34 अध्यापक, भौतिकी विभाग के 16 और रसायन–विज्ञान विभाग के 18 ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

एक लघु उद्घाटन सत्र संस्थान के डॉ. जे एन बरूआ सभागार में डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी की अध्यक्षता में हुआ। डॉ. राव ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि सीएसआईआर ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम विकासों का प्रचार करने हेतु संकाय सदस्यों और कॉलेजों व स्कूल के विद्यार्थियों के लिए महत्वाकांक्षी कार्यक्रम बनाया है । उन्होंने प्रतिभागी अध्यापकों को विज्ञान में बदलते परिवेश के साथ अपने को अद्यतन करने, वैज्ञानिकों और अन्य वैज्ञानिक संगठनों के साथ संबद्धता बनाने और उसे अपने विद्यार्थियों को देने ताकि दीर्घावधि में पूरा समाज लाभांवित हो सके, के लिए प्रोत्साहित किया ।

कार्यशाला समानांतर रूप से दो समूहों अर्थात् रसायन–विज्ञान और भौतिकी के लिए दो तकनीकी सत्रों में आयोजित की गई । कार्यशाला में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों का वैज्ञानिकों के साथ संवाद और प्रयोगात्मक तकनीकों पर प्रदर्शन सहित भौतिकी और रसायन–विज्ञान के क्षेत्र में एनईआईएसटी के विख्यात वैज्ञानिकों और स्रोत व्यक्तियों द्वारा विभिन्न व्याख्यान दिए गए । स्रोत व्यक्ति और विषय निम्नानुसार हैं :

भौतिकी

नाम	पदनाम/संगठन	विषय
प्रो. अलिका खरे	प्रोफेसर, आईआईटी–गुवाहाटी	लेजर स्पेक्ट्रोस्कोपी के कुछ उन्नत अनुप्रयोग
डॉ. आर के बरूआ	वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी	कोयले की रासायनिक संरचना : एक एक्स–रे स्कैटरिंग अध्ययन
प्रो. ए. गोहेन बरूआ	प्रोफेसर, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी	प्रतिदीप्ति : मूल सिद्धांत और अनुप्रयोग
प्रो. ए. कुमार	प्रोफेसर, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर	कार्बन नैनो सामग्री

रसायन–विज्ञान		
नाम	पदनाम / संगठन	विषय
प्रो. ए.के. सैकिया	प्रोफेसर, आईआईटी–गुवाहाटी	संश्लेषण में पॉट एटम और स्टैप इकोनोमी (पीएएसई)
डॉ. एस महीउद्दीन	मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी	हरित रसायन–विज्ञान में नई अवधारणा ''प्रकृति में रसायन–विज्ञान''
प्रो. जे.एन. गांगुली	प्रोफेसर, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी	21वीं सदी में पर्यावरणीय दीर्घकालिक विकास–उत्प्रेरक विज्ञान की भूमिका
डॉ. एन. सी. बरूआ	मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी	उत्तर–पूर्व संसाधनों के साथ हर्बल औषधि विकास

17 नवंबर, 2011 को विदाई सत्र हुआ और सत्र की अध्यक्षता डॉ. आर. सी. बरूआ, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने की। डॉ. बरूआ ने अपने अध्यक्षीय भाषण में अध्यापकों से उनके विद्यार्थियों को मूलभूत विज्ञान के प्रति उत्प्रेरित करने और मार्गदर्शन करने की अपील की। उन्होंने परियोजनाएं लिखने और डीएसटी, डीबीटी व अन्य निधीयन निकायों से निधियन प्राप्त करने के लिए भी प्रोत्साहित किया। अपने अनुभवों का उल्लेख करते हुए प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के बारे में अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त कीं और उन्होंने सीएसआईआर – एनईआईएसटी और सीएसआईआर के प्रति संकाय सदस्यों और विद्यार्थियों के लाभार्थ इस प्रकार की कार्यशाला व प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाने के लिए प्रशंसा की और आभार प्रकट किया। अध्यापकों को सहभागिता प्रमाणपत्र दिए गए । धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

प्राणी–विज्ञान और वनस्पति विज्ञान विभागों के संकाय सदस्यों के लिए दूसरी कार्यशाला 14–15 फरवरी, 2012 को सीएसआईआर–एनईआईएसटी परिसर में आयोजित की गई। चार कालेजों के वनस्पति–विज्ञान और प्राणी विज्ञान विभागों और केंद्रीय विद्यालय के एक संकाय सदस्य नामतः बहोना कालेज, जोरहाट; दाररंग कालेज, तेजपुर;, लखीमपुर गर्ल्स कालेज, उत्तरी लखीमपुर, उत्तरी लखीमपुर कालेज, उत्तरी लखीमपुर और केंद्रीय विद्यालय, सीएसआईआर–एनईआईएसटी को कार्यशाला में आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में, 27 अध्यापकों जिनमें वनस्पति विज्ञान के 12 अध्यापक और प्राणि–विज्ञान के 15 अध्यापकों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन

संस्थान के डॉ. जे.एन. बरूआ सभागार में हुए लघु उद्घाटन सत्र मे हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ. आर.सी. बरूआ, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने किया। डॉ. एल नाथ, मुख्य वैज्ञानिक व कार्यक्रम के संयोजक ने उद्घाटन सत्र के दौरान इस कार्यक्रम के उद्देश्य का संक्षेप में उल्लेख किया। डॉ. आर.सी. बरूआ ने अपने अध्यक्षीय भाषण में अध्यापकों को उनकी नियमित शिक्षण गतिविधियों के अलावा अनुसंधान गतिविधियां करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने, उनके विद्यार्थियों को मौलिक विज्ञान के अपने कैरियर के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने का अनुरोध किया।

कार्यशाला समानांतर रूप से दो समूहों अर्थात वनस्पति विज्ञान और प्राणी–विज्ञान के लिए दो तकनीकी सत्रों में आयोजित की गई। कार्यशाला में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों का वैज्ञानिकों के साथ संवाद और प्रयोगात्मक तकनीकों पर प्रदर्शन सहित वनस्पति–विज्ञान और प्राणि–विज्ञान के क्षेत्र में एनईआईएसटी के विख्यात वैज्ञानिक और स्रोत व्यक्तियों द्वारा विभिन्न व्याख्यान दिए गए।

स्रोत व्यक्ति और विषय निम्नानुसार हैः–

वनस्पति–शास्त्र

नाम	पदनाम/संगठन	विषय
प्रोफेसर बी.के. कोनवार	उप–कुलपति, नागालैंड विश्वविद्यालय, नागालैंड	बायोपोलीमर प्रयुक्त करते हुए औषध अंतरण
प्रोफेसर आर सरमा	प्रोफेसर, असम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहाट	पौधों में डीएनए मार्कर मीडिएटेड जेनेटिक विश्लेषण
डॉ. एस.सी. नाथ	प्रमुख वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी	उत्तर–पूर्व भारत में ह र्बल औषध अनुसंधान में ईथनो बोटेनिक विजडम की संभावनाएं
डॉ. एस.पी. सैकिया	वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, जोरहाट	बायोडीजल उत्पादन हेतु गैर खाद्य तेल पौधे वैकल्पिक स्रोत के रूप में
प्राणि–विज्ञान		
नाम	पदनाम/संगठन	विषय
डॉ. बी.जी. उन्नी	प्रमुख वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी	जीवाणुओं, पौधों और कीटों से जैविक प्रभावी अणु की आणविक व कार्यकारी विशेषताएं
प्रोफेसर आर.के. भोला	प्रोफेसर, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी	न्यूरो हार्मोन्स
प्रोफेसर एस.सी. बिस्वास	प्रोफेसर, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, डिब्रूगढ़	एक्वेरियम फिश कल्चर
डॉ. एम. भुयान	वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी	जूफार्माकोग्नोजी

डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, जोरहाट के अध्यक्षता में लघु विदाई समारोह के साथ 15 फरवरी, 2012 को कार्यशाला का समापन हुआ। प्रोफेसर बी.के. कोनवार, उप–कुलपति, नागालैंड विश्वविद्यालय; नागालैंड मुख्य अतिथि के रूप में सत्र में उपस्थित हुए। सत्र के प्रारंभ में प्रत्येक कालेज के वनस्पति–विज्ञान और प्राणी–विज्ञान के प्रतिभागी अध्यापकों को कार्यक्रम के बारे मे अपने अनुभव बताने और प्रतिक्रियाएं देने का अवसर दिया गया । प्रतिभागी अध्यापकों ने कार्यशाला की अत्यंत सराहना की। प्रोफेसर बी. के. कोनवार ने अपना भाषण देते हुए प्रतिभागी अध्यापकों को विज्ञान के बदलते परिवेश के साथ अपने को अद्यतन करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने अध्यापकों को उनके विद्यार्थियों को विज्ञान में अपना कैरियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करने का अनुरोध किया।

तीसरी कार्यशाला बहोना कालेज, जोरहाट और केंद्रीय विद्यालय, एनईआईएसटी–जोरहाट के ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए 29 मार्च, 2012 को आयोजित की गई। कार्यक्रम में 24 विद्यार्थियों और 3 सहचर अध्यापकों ने भाग लिया। कार्यशाला में रसायन और जैविक विज्ञान के क्षेत्र में एनईआईएसटी के विख्यात वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न व्याख्यान दिए गए। विषय थे : ''हमारे जीवन में रसायन–विज्ञान'' डॉ. एम.जे. बोरडोलोई, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक द्वारा और डॉ. एम. भुयान, वैज्ञानिक द्वारा ''कीटों की दुनियां''। विद्यार्थियों ने विषयों पर अधिक जानकारी के लिए स्रोत व्यक्तियों से संवाद किया। व्याख्यान सत्र के उपरांत प्रदर्शन–व–संवाद सत्र हुआ । विद्यार्थियों को छह समूह में बांटा गया। समूहों को संस्थान के विभिन्न प्रभागों में चल रही अनुसंधान व विकास गतिविधियों और वैज्ञानिकों के साथ संवाद के लिए ले जाया गया।

कार्यशाला के समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ. आर.सी. बरूआ, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने की। समारोह के दौरान कुछ प्रतिभागी विद्यार्थियों और सहचर अध्यापकों ने अपनी प्रतिक्रियाएं दीं और सीएसआईआर व एनईआईएसटी के प्रयासों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। अध्यक्ष ने प्रतिभागी विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र दिए। डॉ. बरूआ ने अपने अध्यक्षीय भाषण के विद्यार्थियों को उनकी सक्रिय सहभागिता, उनकी प्रतिक्रियाओं और प्राप्त सुझावों की सराहना की।

आयोजित समारोह

सीएसआईआर–एनईआईएसटी में आयोजित राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

(बाएं) : डॉ. जे. महन्ता, निदेशक, आरएमआरसी, आईसीएमआर, डिब्रुगढ़, प्रौद्योगिकी दिवस व्याख्यान देते हुए, मंच पर डॉ. पी जी राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी भी बैठे हैं।
(दाएं) : एनईआईएसटी न्यूज का विमोचन : जनवरी–फरवरी, 2011, डॉ. महन्त द्वारा?

सीएसआईआईआर–पूर्वोत्तर विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर–एनईआईएसटी), जोरहाट में एक सुनियोजित कार्यक्रम के साथ अपने परिसर में 11 मई 2011 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस आयोजित किया । अपार भारतीय प्रौद्योगिकी की क्षमता के फलस्वरूप प्रत्येक वर्ष 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया जाता है । प्रौद्योगिकी दिवस समारोह, डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, जोरहाट की अध्यक्षता में एनईआईएसटी ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया । अतिथियों का स्वागत करते हुए डॉ. राव ने दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला और पिछले वर्षों के दौरान सीएसआईआर–एनईआईएसटी द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी के बारे में भी बताया । उन्होंने यह भी बताया कि सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने बड़े उद्यमियों के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास करने के साथ–साथ लघु और सरल प्रौद्योगिकियों पर भी विशेष बल दिया है और उनका विकास किया है जिनसे लोग सीधे ही लाभान्वित हुए हैं । उन्होंने कहा कि सीएसआईआर–एनईआईएसटी वहनीय स्वास्थ्य परिचर्या के लिए सस्ती औषधियों के क्षेत्र में भी, विशेष रूप से हर्बल औषधियों के क्षेत्र में भी कार्य कर रहा है । उन्होंने अतिथियों को सूचित किया कि सीएसआईआर–एनईआईएसटी को फीडबैक प्राप्त करने के लिए लोगों को मुफ्त वितरण करने के लिए औषधियों का निर्माण करने के लिए औषधि लाइसेंसिंग प्राधिकारी, गुवाहाटी द्वारा (हाल ही में विकसित हर्बल औषधि अर्थराइटिस–रोधी और फंगी नष्टकर) लाइसेंस मंजूर किया गया है । डॉ. जे. महन्त, निदेशक, क्षेत्रीय मेडिकल अनुसंधान केंद्र (आरएमआरसी), पूर्वोत्तर क्षेत्र, आईसीएमआर, डिब्रुगढ़ ने मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की शोभा बढ़ाई और ''चेलेन्जिज फार टेक्नोलॉजी इन मेडिकल डायग्नोस्टिक्स एण्ड पर्सनलाइज्ड ड्रग थेरापी'' पर एक मार्गदर्शी प्रौद्योगिकी दिवस व्याख्यान दिया । उन्होंने कहा कि विभिन्न प्रौद्योगिकियों के विकास और सफलता के बीच आजकल समयावधि में कमी आई है । इसके अलावा, उन्होंने कहा कि एक रोग मुक्त विश्व कायम करने, जीवन और लंबी आयु की उच्च कोटि बनाए रखने के लिए प्रौद्योगिकी विकास की जरूरत पैदा हुई है । उन्होंने मोलेक्युलर निदान में प्रयुक्त प्रौद्योगिकियों और चुनौतियों के बारे में चर्चा की । उन्होंने, फार्माकोलॉजिकल विज्ञान, जैसे कि तैयाशुदा औषधि उपचार और जेनेटिक प्रोफाइलिंग में प्रगति के बारे में भी चर्चा की । उन्होंने कहा कि आजकल विभिन्न रोगों के लिए प्रीडिक्टिव बायोमार्कर ने शीघ्र ही संक्रमण की संभावना का निदान और पता लगाना सहज बना दिया है। उन्होंने व्यक्तिगत औषधि उपचार और मेडिकल अनुसंधान में प्रयुक्त यंत्रों में प्रगति के बारे में बताया। अन्त में, उन्होंने मेडिसिन में नैनोबायोटैक्नोलॉजी के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि यह बहुत–सी बीमारियों पर काबू पाने के लिए निदान और उपचार में एक बड़ी भूमिका निभा सकती है। उन्होंने यह कहकर अपना व्याख्यान समाप्त किया कि अज्ञात बीमारियों के निदान शास्त्र जैसे मेडिकल निदान में पेश आने वाली चुनौतियों पर काबू पाने के लिए व्यक्तिकृत इलाज आदि का विकास करने के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास किया जाना चाहिए। अवसर के अनुरूप श्री बी.सी. सैकिया, विज्ञानी, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने वित वर्ष 2010–11 के दौरान संस्थान की पेटेन्ट स्थिति पर प्रकाश डाला जिसमें पिछले वर्ष की

तुलना में सुधार हुआ जिसके बाद, संस्थान के एक द्विमासिक सूचना पत्र ''एनईआईएसटी न्यूज'' का मुख्य अतिथि द्वारा औपचारिक रूप से विमोचन किया गया जिन्होंने प्रकाशन की अत्यंत प्रशंसा की। इस दिन को ''मुक्त दिवस'' के रूप में भी मनाया गया और प्रयोगशाला को सुबह के समय लोगों के लिए खुला रखा गया। अध्यापकों के साथ लगभग 500 छात्र व अन्य व्यक्ति आए तथा वैज्ञानिकों के साथ विचार–विमर्श किया।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी कर्मचारी सहकारी केडिट और बचत सोसायटी के नए पदाधिकारियों का चुनाव

सीएसआईआर–एनईआईएसटी की कर्मचारी सहकारी केडिट और बचत सोसायटी ने सचिव (एक) और सदस्य (पांच) के पद के लिए 2011–12 अवधि के लिए 12 मई, 2011 को आम चुनाव आयोजित किया। श्री मोनदीप बरूआ को सचिव पद के लिए चुना गया तथा श्री हीमेन कुमार बोर्थाकुर, श्री प्रवीण कुमार फुकन, सुश्री जोनाली सैकिया चौधरी, श्री चन्द्रधर तमुली और श्री प्रसाद हजारिका को सदस्यों के रूप में चुना गया।

सोसायटी के शेयरधारी मतदान दिवस वाले दिन अपना वोट डालते हुए

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने देश का 65वां स्वतंत्रता दिवस मनाया

बाएं : डॉ. पी जी राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, गार्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण करते हुए।
दाएं : डॉ. राव दिवस पर अपना भाषण देते हुए।

पर्याप्त मनोहारी माहौल में, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने प्रशासन भवन के सामने आयोजित एक संक्षिप्त समारोह के साथ 15 अगस्त, 2011 को देश का 65वां स्वतंत्रता दिवस मनाया। इस अवसर पर डॉ. पी. जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी द्वारा गार्ड ऑफ आनर का निरीक्षण किया गया जिसके बाद एनईआईएसटी परिवार, केंद्रीय विद्यालय के छात्रों और अध्यापकों के समक्ष राष्ट्रीय तिरंगा फहराया गया । राष्ट्रीय ध्वज फहराने के बाद, देश के स्वतंत्रता सैनानियों को श्रृद्धा सुमन अर्पित करने के लिए राष्ट्र गान गाया गया। उसके बाद, डॉ. राव ने, एनईआईएसटी के सुरक्षा सेक्शन के सदस्यों, केवि–एनईआईएसटी के छात्रों और एनईआईएसटी अनुसंधान छात्रों द्वारा प्रदर्शित मार्च पास्ट की सलामी ली। इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. राव ने सभी से अपनी शपथ का स्मरण करने और पुनः राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सामंजस्य के लिए समर्पित करने का आग्रह किया। डॉ. राव ने, प्रकाशित पत्रों और बाह्य नकद प्रवाह की दृष्टि से, जो उनके कथनानुसार अभी तक संस्थान द्वारा अर्जित सर्वाधिक था, वर्ष 2010–11 के दौरान, संस्थान द्वारा की गई उपलब्धियों का एक संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया। उन्होंने, नए कर्मचारी भर्ती करके और वर्ष के दौरान विद्यमान स्टाफ का आंकलन करके जनशक्ति के सुदृढ़ीकरण का भी उल्लेख किया। डॉ. राव ने यह भी कहा कि संस्थान के स्वर्ण जयंती वर्ष को देखते हुए वर्ष 2010–11 का एक विशेष महत्व है। समारोह के अंत

में एकत्रित समूह में राष्ट्र गान गाया।

इस अवसर पर एक संक्षिप्त सांस्कृतिक समारोह आयोजित किया गया जिसमें एनईआईएसटी अनुसंधानकर्त्ताओं, केंद्रीय विद्यालय के छात्रों और एनईआईएसटी कर्मचारियों के बच्चों द्वारा रंगीन नृत्य और संगीत का प्रदर्शन किया गया।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने राज्य शोक दिवस मनाया

असम सरकार के अनुरोध पर सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने, स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त 2004) पर असम के लखीमपुर जिले के अंतर्गत धेमजी में बम्ब धमाके में मारे गए लोगों की स्मृति में शेष राज्य के साथ, 16 अगस्त, 2011 को राज्य ''शोक दिवस'' मनाया। यह दिन हर वर्ष मनाया जाता है। एनईआईएसटी ऑडिटोरियम में एक शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया जिसमें स्टाफ के सदस्यों के साथ–साथ निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने भी शपथ ग्रहण समारोह में भाग लिया।

सदभावना दिवस

संस्थान ने, शेष देश के साथ–साथ 19 अगस्त 2011 को ''सदभावना दिवस'' मनाया। यह दिन भारत के स्व. प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की जयंती मनाने के लिए हर वर्ष मनाया जाता है। निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने स्टाफ सदस्यों के साथ शपथ ग्रहण समारोह में भाग लिया।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने सभागार को पूर्व निदेशक स्व. डॉ. जे.एन. बरूआ के नाम में समर्पित किया

(बाएं) : डॉ. जी. त्यागराजन, पूर्व यूनिडो राष्ट्रीय परामर्शदाता और पूर्व निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, समर्पण फलक का अनावरण करते हुए तथा (उनकी बाईं ओर) डॉ. पी जी राव, निदेशक, सीएसआईआर– एनईआईएसटी, निहार रहे हैं। अवसर पर डॉ. जी. त्यागराजन व्याख्यान देते हुए।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी स्वर्ण जयंती वर्ष समारोह कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, निदेशक और सीएसआईआर–एनईआईएसटी के स्टाफ ने सीएसआईआर–एनईआईएसटी के ऑडिटोरियम को पूर्व निदेशक स्व. डॉ. जे.एन. बरूआ के नाम में समर्पित किया जो पिछले वर्षों में एक नेता थे । एक संक्षिप्त समर्पण समारोह में, जो 1 सितंबर, 2011 को ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया था । डॉ. जी. त्यागराजन, पूर्व यूनिडो राष्ट्रीय परामर्शदाता और पूर्व निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी व अन्य सीएसआईआर प्रयोगशाला ने सभागार को, डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, स्व. डॉ. जे.एन. बरूआ, के परिवार सदस्यों, सीएसआईआर–एनईआईएसटी भ्रातृ संघ तथा सीएसआईआर पेंशनभोगी कल्याण एसोशिएशन (एनई चेप्टर) के सदस्यों की उपस्थिति में समर्पित किया । समारोह के प्रारंभ में डॉ. जी. त्यागराजन, डॉ. पी.जी. राव, व सीएसआईआर पेंशनभोगी कल्याण एसोसिएशन (एनई चेप्टर) से अन्य विशिष्ट महानुभावों ने स्व. डॉ. जे.एन. बरूआ के चित्र पर श्रृद्धांजलि अर्पित की जिसके बाद ऑडिटोरियम के सामने की ओर डॉ. त्यागराजन ने समर्पण फलन का अनावरण किया । इसके बाद डॉ. पी. जी. राव और डॉ. जी. त्यागराजन ने सभागार के अंदर एकत्रित समूह को संबोधित किया ।

डॉ. राव ने कहा कि संस्थान के स्वर्ण जयंती वर्ष के मध्य में संस्थान को स्व. कर्नल डॉ. बी.एम. मित्रा और उनके उत्तराधिकारियों के

नेतृत्व में पिछले निदेशकों के योगदान पर गर्व का अनुभव करता है और उन्हें स्मरण करता है जिन्होंने प्रयोगशाला को इसके प्रारंभिक वर्षों से वर्तमान स्वरूप में लाया । डॉ. राव ने यह भी कहा कि इस महत्वपूर्ण अवस्थापना को संस्थान में बदलने की परिकल्पना डॉ. जी. त्यागराजन की थी, जो इसके विपरीत उन वर्षों के दौरान इसके निकट में कहीं विद्यमान नहीं थी । उन्होंने राय व्यक्त की कि स्वर्ण जयंती समारोह के बैनर के तहत डॉ. त्यागराजन द्वारा समर्पण से यह अवसर और अधिक संगत और यादगार बन गया है । डॉ. राव ने, संस्थान में उनके निदेशक के कार्यकाल के दौरान, डॉ. त्यागराजन द्वारा प्रदान किए गए नेतृत्व के बारे में संक्षेप में बताया और कृषि रसायनों, नाशिकीटों आदि के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व की परियोजनाओं में उनकी अग्रणी भूमिका का उल्लेख किया । इस अवसर पर भाषण देते हुए डॉ. जी. त्यागराजन ने यह कहते हुए कि संस्थान का उनका दौरा सदा ही धर आने जैसा है, अपनी खुशी जाहिर की । डॉ. त्यागराजन ने विज्ञान के क्षेत्र में और देश में इसके विकास के लिए विगत में विशिष्ट महानुभावों के महत्वपूर्ण योगदान के बारे में विस्तारपूर्वक बताया । उन्होंने प. जवाहरलाल नेहरू द्वारा किए गए योगदान और वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के स्थापना में उनकी अग्रणी भूमिका के बारे में विशेष रूप से उल्लेख किया, जो आज विश्व में एक सबसे बड़ा वैज्ञानिक संगठन बन गया है। डॉ. त्यागराजन ने, सीएसआईआर में इसके कर्मचारियों के व्यावहारिक कैरियर में वृद्धि के लिए व्यापक अवसर पैदा करने के लिए श्री हुसैन जाहिर का भी सम्मानपूर्वक उल्लेख किया । उन्होंने, सीएसआईआर के पूर्व महानिदेशक डॉ. वर्दाराजन द्वारा प्रदान किए गए नेतृत्व के बारे में भी, विशेष रूप से भोपाल त्रासदी के समय प्रस्तुत राष्ट्रीय संकट के दौरान नेतृत्व और डॉ. आर.ए. माशेलकर की अग्रणी भूमिका का भी उल्लेख किया जो भी सीएसआईआर में विज्ञान के नए क्षेत्रों के खोलने में सीएसआईआर के पूर्व महानिदेशक थे । विज्ञान के अन्य पहलुओं की चर्चा करने के अलावा, डॉ. त्यागराजन ने यह भी कहा कि एक उत्तम नेता को सदैव एक उदाहरण कायम करके लोगों का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए । जिसके संबंध में उन्होंने फ्रेंकलिन रूजवेल्ट का एक प्रसिद्ध उद्धरण दिया, जिसमें कहा गया था कि "राष्ट्र की सेवा करने से कोई अधिक बेहतर व्यवसाय नहीं हो सकता"। दिवस के महत्व के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि ऑडिटोरियम एक सांकेतिक स्थान है जहां एक निश्चित स्वरूप की जरूरत है तथा यह समर्पण संस्थान के इतिहास में एक सर्वोत्तम व्यक्ति और नेता के सम्मान में किया गया है । श्रीमती मानसी शर्मा बरूआ पुत्री स्व. डॉ. जे. एन. बरूआ ने अपने भाषण में संस्थान के प्रति अपने स्व. पिता के ईमानदारीपूर्ण समर्पण का उल्लेख किया और कहा कि संस्थान उनके स्व. पिता के लिए हृदय और आत्मा थी । उन्होंने सीएसआईआर–एनईआईएसटी के प्रति और विशेष रूप से निदेशक, डॉ. पी.जी. राव व डॉ. जी. त्यागराजन के प्रति, उनके द्वारा उनके स्व. पिता को उनके नाम में ऑडिटोरियम को समर्पित करके दिए गए सम्मान के प्रति आभार व्यक्त किया । समारोह के अंत में श्री बी.सी. सैकिया, प्रधान वैज्ञानिक तथा अध्यक्ष, सूचना और व्यवसाय विकास प्रभाग ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने हिन्दी सप्ताह मनाया

विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग ने 7 से 14 सितंबर 2011 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया । समारोह सप्ताह के अनुरूप डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी की अध्यक्षता में 14 सितंबर 2011 को डॉ. जे.एन. बरूआ ऑडिटोरियम में एक विशेष समारोह आयोजित किया गया जिसमें डॉ. विजय कुमार शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जे.बी. कालेज, जोरहाट ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया । सीएसआईआर–एनईआईएसटी बंधुओं के अलावा, समारोह में आमंत्रित व्यक्तियों व अन्यों ने भाग लिया । अपने स्वागत भाषण में डॉ. राव ने श्रोतागणों से हिन्दी का प्रयोग करने और उसे लोकप्रिय बनाने का आग्रह किया । उन्होंने इस अवसर पर महानिदेशक, सीएसआईआर, प्रोफेसर समीर के ब्रह्मचारी से प्राप्त संदेश भी पढ़ा जिसमें उन्होंने राजभाषा को लोकप्रिय बनाने के लिए एक साधन के रूप में गुगली साफ्टवेयर अथवा इंटरनेट का उपयोग करने के लिए सभी वैज्ञानिकों और स्टाफ सदस्यों से अपील की गई । इसमें यह भी कहा गया कि केंद्रीय सरकार के कर्मचारी होने के नाते, राजभाषा के रूप में हिन्दी के

डॉ. विजय कुमार शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जे.बी. कालेज, जोरहाट अपना भाषण देते हुए । मंच पर बैठे हैं (दाएं से) डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी और डॉ. जे.सी.एस. कताकी, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी

कार्यान्वयन में सामूहिक रूप से योगदान करना हमारी संवैधानिक ड्यूटी है । श्रोतागणों को संबोधित करते हुए डॉ. विजय कुमार वर्मा ने भारत में हिंदी भाषा के महत्व पर बल दिया । उन्होंने कहा कि विदेश में लगभग 200 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है क्योंकि वे महसूस करते हैं कि भारत व्यवसाय करने के लिए एक बड़ा बाजार है । अपने प्रस्तावना भाषण में डॉ. जे.सी.एस. कताकी, मुख्य वैज्ञानिक, ने कहा कि सीएसआईआर–एनईआईएसटी में हिंदी भाषा और प्रशिक्षण के लिए सभी सुविधाएं हैं और सूचित किया कि अधिकांश कर्मचारियों को हिंदी में प्रशिक्षित किया जा चुका है । उन्होंने सप्ताह लंबे समारोह के दौरान आयोजित अनेक प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए सभी प्रतिभागियों और विजेताओं को बधाई भी दी । कार्यक्रम संचालित करते हुए, श्री अजय कुमार, प्रभारी, राजभाषा, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम घोषित किए जिन्हें मुख्य अतिथि डॉ. वर्मा द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए । इसके अलावा उन सीएसआईआर–एनईआईएसटी स्टाफ सदस्यों को प्रमाणपत्र भी वितरित किए गए जिन्होंने वर्ष 2011 के दौरान हिंदी कार्यान्वयन कार्यक्रम के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा आयोजित प्रबोध/प्रवीण/प्राज्ञ परीक्षाएं पास की । इसके अलावा, सूचना और व्यवसाय विकास प्रभाग, सीएसआईआर–एनईआईएसटी को प्रकाशन कार्यों में हिंदी भाषा के बेहतर कार्यान्वयन के लिए एक सराहना प्रमाणपत्र और नकद पुरस्कार प्रदान किया गया । यह पुरस्कार प्रभाग के अध्यक्ष, श्री बी.सी. सैकिया द्वारा प्राप्त किया गया । कार्यक्रम के अंत में श्री राजेन सरमाह, के आरसी, सीएसआईआर–एनईआईएसटी द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया ।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने असम विज्ञान सोसायटी के साथ संयुक्त रूप से सत्रहवां डॉ. जे. एन. बरूआ स्मारक व्याख्यान आयोजित किया

(बाएं) : मंच पर महानुभाव (दाएं से) डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी , डॉ. जी. त्यागराजन, पूर्व निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, डॉ. जे.सी.एस. कताकी, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी तथा अध्यक्ष असम विज्ञान सोसायटी, डॉ. ए.के. बरूआ, प्रिंसिपल, डी.आर. कालेज और डॉ. (श्रीमती) एन बुरागोहेन, प्रधान शासी निकाय, डी.आर. कालेज । (दाएं) : डॉ. जी. त्यागराजन, डॉ. जे.एन. बरूआ स्मारक व्याख्यान देते हुए ।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने असम विज्ञान सोसायटी, जोरहाट शाखा के साथ 2 सितंबर, 2011 को डी आर कालेज, गोलाधाट में संयुक्त रूप से 17वां डॉ. जे.एन. बरूआ स्मारक व्याख्यान आयोजित किया । डॉ. जी. त्यागराजन, पूर्व निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने वैज्ञानिकों, आमंत्रित अतिथियों, अनुसंधान अध्येताओं, डी.आर. कालेज के शिक्षकों और छात्रों के समक्ष ''विज्ञान प्रेरित आर्थिक संपन्नता के लिए प्रतिभा, विचार और उद्यम जुटाना – विश्व अनुभव तथा पूर्वोत्तर संदर्भ'' पर स्मारक व्याख्यान दिया । अपने अत्यंत प्रबुद्ध विषय में डॉ. त्यागराजन ने उद्यम और वृद्धिशील औद्योगिक उद्यमों की दृष्टि से विकसित देशों में हो रही प्रगति और घटनाओं के बारे में बताया । पहले डॉ. ए.के. बरूआ, प्रिंसिपल, डी. आर. कालेज, ने स्वागत भाषण दिया जिसमें उन्होंने कहा कि अपने अस्तित्व के 63 वर्षों के दौरान कालेज ने पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न जातीय और भिन्न–भिन्न सांस्कृतिक समुदायों के युवाओं को उत्तम शिक्षा प्रदान की है । उन्होंने पिछले वर्षों के दौरान कालेज के अकादमिक कार्यकलापों और उपलब्धियों के बारे में बताया । डॉ. जे.सी. एस. कताकी ने अध्यक्षीय अभिभाषण दिया तथा असम विज्ञान सोसायटी, जोरहाट शाखा के कार्यकलापों पर प्रकाश डाला । महानुभावों और डॉ. जे.एन. बरूआ स्मारक न्यास के सदस्यों द्वारा (स्व.) डॉ. जे.एन. बरूआ के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई । अपने

उद्घाटन भाषण में डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर – एनईआईएसटी ने कहा कि विशिष्ट विज्ञानी को श्रृद्धाजलि अर्पित करने का यह एक बहुत ही शुभ दिन है जिसने पूर्वोत्तर भारत में विज्ञान के लिए अपार योगदान किया। उन्होंने यह भी कहा कि यह एक अंत्यंत खुशी की बात है कि स्व. डॉ. बरूआ की आरआरएल, जोरहाट (अब सीएसआईआर – एनईआईएसटी) में कार्यावधि के दौरान निकटतः जुड़े डॉ. जी. त्यागराजन द्वारा 17वां डॉ. जे. एन. बरूआ स्मारक व्याख्यान दिया गया। उन्होंने कहा कि (स्व.) डॉ. बरूआ ने वैज्ञानिक क्षेत्र में अनेक कार्यक्रम शुरू किए और उनकी कार्यावधि के दौरान सीएसआईआर – एनईआईएसटी में अनेक प्रौद्योगिकियां विकसित की गई। डॉ. राव ने व्याख्यान का उद्घाटन करने और उन्हें कार्यक्रम से जोड़ने के लिए दिए गए अवसर के लिए डॉ. जे.एन. बरूआ स्मारक ट्रस्ट को धन्यवाद भी दिया। श्रोतागणों के लाभार्थ (स्व.) डॉ. बरूआ की एक संक्षिप्त जीवनी भी पढ़ी गई। डॉ. बी.जी. उन्नी, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, जोरहाट ने मुख्य अतिथि डॉ. जी. त्यागराजन का एक संक्षिप्त परिचय दिया जो 3 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के पूर्व निदेशक रहे थे। अन्य वक्ताओं में सम्मिलित थे : डॉ. (श्रीमती) एन.बुरागोहेन, अध्यक्ष, शासी निकाय, डी.आर. कालेज और डॉ. मानश प्रतिम बरूआ, सुपुत्र (स्व.) डॉ. जे.एन. बरूआ। कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, असम विज्ञान सोसायटी ने बाहोना कालेज, जोरहाट की श्रीमती मधुस्मिता बरूआ को 2011 में उनकी मैट्रिकुलेट परीक्षा में उत्तम निष्पादन के लिए नकद पुरस्कार प्रदान किया जो समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग से हैं। बैठक के अंत में डॉ. आई. सी. बरूआ, सचिव, असम विज्ञान सोसायटी, जोरहाट शाखा द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया गया।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने 69वां सीएसआईआर स्थापना दिवस मनाया

(बाएं) : डॉ. के.वी. राघवन, आईएनएई, विशिष्ट प्रोफेसर, भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद, सीएसआईआर प्रौद्योगिकी दिवस व्याख्यान देते हुए ।
(दाएं) : समारोह में श्रोतागण ।

सीएसआईआर–पूर्वोत्तर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर–एनईआईएसटी, जोरहाट) ने एक सुनियोजित कार्यक्रम के साथ 26 सितंबर, 2011 को अपने परिसर में 69वां सीएसआईआर स्थापना दिवस आयोजित किया । समारोह का आयोजन डॉ. जे.एन. बरूआ ऑडिटोरियम में डॉ. आर सी बोरूआ, उत्कृष्ट वैज्ञानिक सीएसआईआर–एनईआईएसटी के सभापतित्व में किया गया जिसमें अनेक आमंत्रित अतिथियों, वैज्ञानिकों, छात्रों, अनुसंधान अध्येताओं और सीएसआईआर–एनईआईएसटी बंधुओं ने, सेवारत और सेवानिवृत्त दोनों ने भाग लिया । डॉ. के.वी. राघवन, आईएनएई, विशिष्ट प्रोफेसर, भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद ने मुख्य अतिथि के रूप में अवसर की शोभा बढ़ाई तथा स्थापना दिवस पर व्याख्यान दिए । कार्यक्रम, ए/बी माध्यम से स्कीन किए गए सीएसआईआर विषय गान से शुरू हुआ । महान समूह का स्वागत करते हुए, डॉ. पी.सी. निओग, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक और कार्यक्रम समन्वयक ने दिवस के महत्व और विकसित प्रौद्योगिकियों, प्रकाशित पत्रों आदि की दृष्टि से वर्षों के दौरान राष्ट्र निर्माण की दिशा में संस्थान द्वारा किए गए योगदान के बारे में बताया । डॉ. निओग ने, यह भी बताया कि विज्ञान भवन, सीएसआईआर मुख्यालय में आयोजित सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह में एंटी–फ्लेशरी रोग और रेशम संवर्धन के लिए बायोफार्मुलेशन आधारित ''टर्मिनेलिआ चेबुला'' पर प्रौद्योगिकी के लिए जीवन विज्ञान के क्षेत्र में संस्थान को सीएसआईआर प्रौद्योगिकी अवार्ड 2011 प्रदान किए जाने की वजह से इस वर्ष का

आयोजन विशेष महत्व रखता है जिसे विज्ञान, सीएसआईआर में मुख्याल में आयोजित सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह में सीएसआईआर–एनईआईएसटी टीम को औपचारिक रूप से इस दिवस पर प्रदान किया जाएगा । ''फार्मास्युटिकल सिनथेसिस–रीसेन्ट ट्रेन्ड्स के लिए स्वच्छ प्रौद्योगिकियां'' पर स्थापना दिवस व्याख्यान देते हुए डॉ. राघवन ने कहा कि औषध निर्माण उद्योग देश में उद्योगों का एक महत्वपूर्ण संघटक है जिसका आधुनिक स्वास्थ्य देखरेख में 95 प्रतिशत से अधिक हिस्सा है और 20,000 पंजीकृत यूनिट हैं जो प्रत्येक वर्ष 2400 फार्मूलेशनों और 500 थोक औषधियों का निर्माण करते हैं । उन्होंने बताया कि भारतीय औषध निर्माण उद्योग का विश्व बाजार में 13 प्रतिशत हिस्सा है । डॉ. राघवन ने आधुनिक औषध निर्माण संश्लेषण को पेश आ रही विभिन्न चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला जो प्रत्येक औषधि मोलेक्यूल और संश्लेषण में प्रयुक्त रासायनिक अथवा जैव वैज्ञानिक अथवा उनके मिश्रण से संबंधित है । डॉ. राघवन ने औषध निर्माण के संश्लेषण के पर्यावरणीय पहलू पर भी बल दिया और बताया कि विभिन्न यूनिट प्रोसेसिज और यूनिट प्रचालनों के बारे में भी बताया और कहा कि एक सेमी बैच रिएक्टर यूनिट प्रोसेसिंग प्रचालन का केंद्र बिंदु है । डॉ. राघवन ने स्वच्छ प्रौद्योगिकियों का आकलन करते समय चार कारकों को ध्यान में रखा जाना चाहिए जो फार्मा अपशिष्ट सृजन, प्रोसेस मास इंटेन्सिटी (पीएमआई), ग्रीन प्रौद्योगिकियां, ई–फैक्टर (पीएमआई–।) और संकटपूर्ण वायु प्रदूषण मानकों (एचएपीआई) के लिए ई–कारक है । इससे पहले श्री पी.के. गोस्वामी, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने मुख्य अतिथि डॉ. के.वी. राघवन का श्रोतागणों से परिचय कराया ।

समारोहों के एक भाग के रूप में स्टाफ सदस्यों का, जो वर्ष 2010–11 के दौरान सेवानिवृत्त हो गए थे, विशेष रूप से संस्थान में और सामान्य रूप से सीएसआईआर में प्रदान की गई। उनकी सेवाओं के सम्मान स्वरूप शाल व अन्य उपहारों से स्वागत किया गया । इसके साथ ही स्टाफ के जिन सदस्यों ने 25 वर्ष की सेवा पूरी कर ली है उनका कलाई घड़ी से स्वागत किया गया । समारोह में, विभिन्न प्रतियोगिताओं, अर्थात् निबंध प्रतियोगिता, ड्राइंग प्रतियोगिता और प्रश्नावली प्रतियोगिता में विजेताओं को स्थापना दिवस समारोह के बैनर के तहत उपयुक्त रूप से पुरस्कृत किया गया । अन्य पुरस्कारों में योग्य अनु. जाति/अनु.जनजाति छात्रों को नकद पुरस्कार सम्मिलित थे जिन्होंने विज्ञान विषय में उच्च अंक प्राप्त करके विभिन्न राज्य बोर्डों से वर्ष 2011 में एचएसएलसी की परीक्षा पास की थी तथा खेलों में उत्कृष्टता के लिए एकमुश्त सीएसआईआर नकद पुरस्कार दिए गए ।

अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए डॉ. आर.सी. बरूआ ने ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर अपने विचारों के लिए डॉ. राघवन के प्रति आभार प्रकट किया । दिवस के बारे में बोलते हुए डॉ. बरूआ ने कहा कि वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) एक सर्वाधिक विविधीकृत सार्वजनिक संगठन के रूप में उभरी है जिसे वहनीय स्वास्थ्य देखरेख, ग्रामीण आवासन, खाद्य सुरक्षा, सुरक्षित पेयजल आदि की व्यवस्था करने का काम सौंपा गया है । उन्होंने कहा कि 1942 में अपनी स्थापना से सीएसआईआर ने फार्मास्युटिकल, बायोलॉजिकल, अभियंती, सामग्री विज्ञान, मृदा विज्ञान आदि के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान कर रही है ।

बाद में, दिवस को ''मुक्त दिवस'' के रूप में मनाया गया तथा संस्थान को छात्रों व सामान्य जनता के दौरे के लिए खुला रखा गया । निकटवर्ती स्कूलों और कालेजों से 500 से अधिक छात्रों ने चल रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यकलापों का खुद निरीक्षण करने के लिए प्रयोगशाला के विभिन्न आर एण्ड डी विभागों का दौरा किया।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया

बाएं : डॉ. जी. त्यागराजन, यूनिडो राष्ट्रीय परामर्शदाता तथा वरिष्ठतम पूर्व निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी अपना भाषण देते हुए।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने 31 अक्तूबर, 2011 से 5 नवंबर, 2011 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया। इस संबंध में, कर्मचारियों के बीच सतर्कता से संबंधित मुद्दों के बारे में जागरूकता का प्रसार करने के लिए संस्थान में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। उद्घाटन समारोह के अवसर पर, डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी की अध्यक्षता में 25 अक्तूबर, 2011 को शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया जिन्होंने कर्मचारियों को शपथ दिलाई।

सप्ताह के दौरान, कर्मचारियों और आम जनता के बीच जागरूकता का प्रसार करने के लिए संस्थान के विभिन्न भागों में

बैनरों/पोस्टरों आदि की प्रदर्शनी आयोजित की गई । इसके साथ ही, सीएसआईआर–एनईआईएसटी के कर्मचारियों के लिए संस्थान में 9 नवंबर, 2011 को एक प्रश्नावली प्रतियोगिता भी आयोजित की गई । इस वर्ष जागरूकता सप्ताह के बाद भी जागरूकता कार्यकलाप आयोजित किए गए जबकि संस्थान में साथ–साथ स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित किया गया । समारोह के अंत में, डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी की अध्यक्षता में 11 नवंबर, 2011 को समापन समारोह आयोजित किया गया जिसमें डॉ. जी. त्यागराजन, यूनिडो राष्ट्रीय परामर्शदाता और वरिष्ठतम पूर्व–निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया । अपने स्वागत भाषण में श्री एस.के. पाल, प्रशासनिक अधिकारी, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने सप्ताह के महत्व और सभी के बीच जागरूकता का प्रसार करने की जरूरत के महत्व के बारे में बताया ताकि हमारे जीवन के किसी भी क्षेत्र में भ्रष्टाचार के विरूद्ध सामूहिक रूप से संघर्ष किया जा सके । डॉ. जी.त्यागराजन ने श्रोतागणों के सामने एक अत्यंत सुंदर और स्पष्ट भाषा में एक विचारोत्तेजक भाषण दिया । अपने भाषण में उन्होंने सभी से सतर्क रहने और अपने दिन–प्रतिदिन के जीवन में किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार से संघर्ष करने का आग्रह किया ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. पी.जी राव ने फाइलों और प्रस्तावों की प्रोसेसिंग में देरी से बचने के महत्व पर बल दिया क्योंकि उससे सरकार के धन और संबंधित व्यक्ति को नुकसान पहुंच सकता है जिसे अप्रत्यक्ष भ्रष्टाचार समझा जा सकता है। उन्होंने श्रोतागणों से कार्य के प्रति अपने विचारों और रूस में और अधिक सकारात्मक होने और अभिवृत्तिमूलक और दर्प भ्रष्टाचार से मुक्त रहने का भी आग्रह किया ।

समारोह में, सप्ताह के दौरान आयोजित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए तथा समारोह के अंत में श्री जे.एल. खोंगसई, प्रशासनिक अधिकारी (कार्यवाहक), सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने 43वें एसएसबीएमटी (बाह्य) जोनल की मेजबानी की

अर्जुन भोगेश्वर बरूआ, 43वें एसएसबीएमटी के उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भाषण देते हुए ।

डॉ. आर.सी. बरूआ, उत्कृष्ठ वैज्ञानिक और प्रभारी–निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, उद्घाटन समारोह में प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए ।

सीएसआईआर–पूर्वोत्तर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान ने 21 से 23 जनवरी, 2012 को इसके परिसर में आयोजित 43वें शांति स्वरूप भटनागर स्मारक टूर्नामेंट (बाह्य) जोनल की मेजबानी की जो सीएसआईआर खेल प्रोत्साहन बोर्ड के तत्वावधान में एक विशाल खेल समारोह है। इस टूर्नामेंट का नाम, सीएसआईआर के प्रथम महानिदेशक डॉ. शांति स्वरूप भटनागर के सम्मान में रखा गया है। टूर्नामेंट का उद्घाटन अर्जुन भोगेश्वर बरूआ द्वारा सीएसआईआर–एनईआईएसटी खेल परिसर में 20 जनवरी, 2012 को बड़ी शान–शौकत के साथ किया गया जिन्होंने मुख्य अतिथि के रूप में समारोह में भाग लिया। सीएसआईआर–एनईआईएसटी भ्रातृत्व तथा अन्य सीएसआईआर प्रयोगशालाओं से प्रतिभागियों के अलावा समारोह में डॉ. आर. मधान, प्रधान वैज्ञानिक, एनआईओ–गोवा तथा प्रेक्षक, सीएसआईआर खेल प्रोत्साहन बोर्ड ने भाग लिया। समारोह की शुरूआत सीएसआईआर–एनईआईएसटी स्टाफ सदस्यों द्वारा सीएसआईआर गान के साथ हुई। प्रतिभागियों और आमंत्रित व्यक्तियों का स्वागत करते हुए डॉ. आर.सी. बरूआ, उत्कृष्ट वैज्ञानिक और मुख्य सलाहकार, स्थानीय आयोजन समिति, 43वां एसएसबीएमटी ने टूर्नामेंट के महत्व और खेल प्रेमियों के बीच इसके महत्व की एक झलक प्रस्तुत की । उस

सीएसआईआर–एनईआईएसटी खेल परिसर में बॉलीबाल मैच के दौरान एक रोमांचक क्षण

उन्होंने सही भावना के साथ खेल खेलने के लिए खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया और उन्हें सद्भावना प्रदान की। समारोह की स्मृति में ''प्रयास'' नामक एक आकर्षक स्मारिका का मुख्य अतिथि द्वारा विमोचन किया गया तथा समारोह का उद्घाटन रंग–बिरंगे गुब्बारे उठाकर किया गया। तीन दिवसीय बाह्य टूर्नामेंट में क्रिकेट और बॉलीबाल मैच सम्मिलित थे जो सीएसआईआर – एनईआईएसटी खेल परिसर के अलावा अनेक स्थानों पर आयोजित किए गए जैसे कि जेडीएसए खेल परिसर, असम कृषि विश्वविद्यालय, खेल मैदान और जोरहाट जिमखाना क्लब खेल मैदान में आयोजित किए गए थे। प्रतिभागियों में, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे, सीएसआईआर – सीजीसीआरआई, कोलकाता, सीएसआईआर – एनपीएल, नई दिल्ली, सीएसआईआर–आईजीआईबी, नई दिल्ली, सीएसआईआर – एनएमएल जमशेदपुर, सीएसआईआर – सीआईएमएफआर, धनबाद, सीएसआईआर – सीबीआरआई, रूड़की, सीएसआईआर – सीएसआईओ, चंडीगढ़, सीएसआईआर–एएमपीआरआई, भोपाल और सीएसआईआर मुख्यालय से खिलाड़ी सम्मिलित थे। इस अवधि के दौरान एक दैनिक बुलेटिन भी जारी किया गया जिसमें प्रत्येक दिन के कार्यकलापों पर प्रकाश डाला गया तथा अन्य रूचिकर घटनाओं के अलावा खेल क्षेत्र के समाचारों को शामिल किया गया।

दिन उन्होंने विगत में सीएसआईआर–एनईआईएसटी में दो बार प्रथम जनवरी 1979 में और द्वितीय दिसम्बर 2007 में आयोजित ऐसे ही समारोह की याद दिलाई ।

उन्होंने राय व्यक्त की कि टूर्नामेंट खिलाड़ियों के बीच सर्वोत्तम खिलाड़ीपन उत्पन्न हो सकता है तथा सीएसआईआर परिवार में भाईचारे की भावना मजबूत हो सकती है । समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि अर्जुन भोगेश्वर बरूआ द्वारा ध्वजारोहण किया गया, डॉ. बी.पी. बरूआ, प्रधान विज्ञानी, सीएसआईआर–एनईआईएसटी के नेतृत्व में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं से प्रतिभागी टीम और के.वि.–एनई आईएसटी के छात्रों द्वारा मार्च–पास्ट का आयोजन किया गया, तथा 11वीं असम पुलिस बटालियन, डेरेगांव द्वारा बैण्ड वादन किया गया । अर्जुन भोगेश्वर ने खेल–कूद के महत्व और उत्तम खिलाड़ियों के बीच कैरियर विकास की संभावना के बारे में बताया।

जेडीएसए ग्राउण्ड, जोरहाट में चल रहा एक क्रिकेट मैच

अन्य मुख्य–मुख्य बातों में 21–22 जनवरी, 2012 को शाम को आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्मिलित थे । प्रत्येक दिन आयोजित क्रिकेट मैचों के मैन ऑफ दि मैच को तथा वॉलीबाल मैचों के सर्वोत्तम खिलाड़ियों को पुरस्कार भी वितरित किए गए । टूर्नामेंट के अंत में 23 जनवरी 2012 को डॉ. जे.एन. बरूआ ऑडिटोरियम में समापन समारोह आयोजित किया गया। डॉ. आर. मधान, प्रधान वैज्ञानिक, एनआईओ–गोआ तथा प्रेक्षक सीएसआईआर खेल प्रोत्साहन बोर्ड ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया।

समारोह की शुरूआत सीएसआईआर गान के साथ हुई जिसे श्रृव्य–दृश्य पद्धति के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। डॉ. एन.सी बरूआ, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी तथा आयोजन सचिव, एसएसबीएमटी, और साथ ही प्रधान सीएसआईआर–एनईआईएसटी स्टॉफ क्लब, ने स्वागत भाषण दिया जिसमें उन्होंने एक तीव्र और रंगारंग तीन दिवसीय टूर्नामेंट का सार प्रस्तुत किया। डॉ. आर. मधान ने अपने भाषण में डॉ. पी.जी. राव की सराहना की और उनकी टीम की सीएसआईआर–एनईआईएसटी में 43वां एसएसबीएमटी की मेजबानी करने और उक्त अवधि के दौरान उनके आरामप्रद आवास के लिए की गई कुल मिलाकर व्यवस्था की सराहना की। उन्होंने भिन्न–भिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं से सभी प्रतिभागियों को उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए बधाई दी और आने वाले समय में उनके लिए शुभ कामनाएं व्यक्त की। उन्होंने वरिष्ठ खिलाड़ियों से युवा होनहार खिलाड़ियों के लिए उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करने का भी आग्रह किया। अपना भाषण देते हुए डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने प्रतिभागियों से सभी क्षेत्रों में सीएसआईआर टीम को मजबूत बनाए रखने के लिए अपने प्रयास जारी रखने तथा एकता की भावना को बनाए रखने की अपील की।

डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, समापन समारोह में बोलते हुए । मंच पर बैठे अन्य व्यक्ति हैं : डॉ. आर. मधान, प्रधान विज्ञानी, सीएसआईआर–एनआईओ और प्रेक्षक, सीएसआईआर खेल प्रोत्साहन बोर्ड ।

उन्होंने जोनल टूर्नामेंट के विजेताओं तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं से पूरी प्रतिभागी टीम को बधाई दी। समारोह में उपस्थित प्रतिभागियों ने निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी और उनकी टीम का जोरदार स्वागत किया जो स्थानीय आतिथ्य के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त करने के लिए था। समारोह में, विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत पुरस्कार वितरित किए गए। वॉलीबाल मे एनपीएल, नई दिल्ली के मुदित शर्मा को और क्रिकेट में एनसीएल, पुणे के श्री ए एस फडके को "मैन ऑफ दि टूर्नामेंट" का पुरस्कार दिया गया। सीजीसीआरआई, कोलकाता को सर्वोत्तम अनुशासन–बद्ध टीम और आईजीआईबी, नई दिल्ली को सर्वोत्तम मार्च पास्ट टीम के लिए पुरस्कृत किया गया। समारोह के अंत में डॉ. जतिन कलिता, जूनियर वैज्ञानिक और सहायक सचिव, आयोजन समिति ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

डॉ. आर.सी. बरूआ, प्रभारी निदेशक द्वारा नए वर्ष का संदेश

(बाएं): डॉ. आर.सी. बरूआ, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, नववर्ष का संदेश देते हुए । (दाएं) : सीएसआईआर–एनईआईएसटी स्टाफ सदस्यों का एक समूह ।

डॉ. आर.सी. बरूआ, उत्कृष्ट विज्ञानी और प्रभारी निदेशक, ने 2 जनवरी, 2012 को डॉ. जे.एन. बरूआ ऑडिटोरियम में सीएसआईआर–एनईआईएसटी स्टाफ सदस्यों को संबोधित किया तथा एक शुभ व खुशहाल नववर्ष 2012 के लिए सभी को अपनी बधाई दी । अपने भाषण में डॉ. बरूआ ने वर्ष 2011 के दौरान संस्थान के कार्यकलापों और उपलब्धियों का एक संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया जैसे कि संस्थान द्वारा अन्य संगठनों और संस्थानों के साथ किए गए कुछ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन संस्थान और इसके वैज्ञानिकों को प्रदान किए गए कुछ प्रतिष्ठित अवार्ड तथा प्रकाशन और वार्षिक कामकाज में संस्थान का कार्य निष्पादन डॉ. बरूआ ने संस्थान के स्वर्ण जयंती समारोह के पूरा होने और इसके बैनर के तहत आयोजित विभिन्न कार्यकलापों का उल्लेख किया। उन्होंने एनईआईएसटी का सम्मान बनाए रखने के लिए उनकी सेवाओं और कठिन कार्य के लिए सभी स्टाफ सछसयों को बधाई दी । उन्होंने उनसे 2012 में अपना कार्यकाल एक सकारात्मक अभिवृत्ति, पुनर्समर्पण और संस्थान तथा सोसायटी की भलाई के लिए अपने प्रयासों में तेजी लाने की भी अपील की । इस अवसर पर, डॉ. बरूआ ने डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी का संदेश भी पढ़ा जो उस दिन उपस्थित नहीं हो सके तथा प्रोफेसर समीर के ब्रह्मचारी, महानिदेशक,–सीएसआईआर का पूरे सीएसआईआर परिवार के लिए संदेश भी पढ़ा। अपने संदेश में डॉ. राव ने कहा कि नया वर्ष पुनः विचारने और अपनी योजनाओं, स्वप्नों, लक्ष्यों तथा उपलब्धियों पर पुनः नजर डालने और अपने कार्यक्रमों को आने वाले वर्ष में और अधिक निष्ठा तथा कठोर परिश्रम के साथ उच्च लक्ष्य प्राप्त करने के वास्ते पुनर्गठित करने का है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2012 को ''देखभाल का वर्ष'' घोषित किया जाए ताकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के परिणाम आम आदमी तक पहुंच सकें। डॉ. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर ने अपने संदेश में वर्ष 2011 में सीएसआईआर द्वारा प्राप्त सफलता के लिए पूरे सीएसआईआर परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया । उन्होंने सभी से और आगे कार्य करने तथा 2012 में और अधिक प्रगति करने के लिए अपील की । उन्होंने यह उम्मीद भी जाहिर की कि सीएसआईआर के प्रयास, एस और टी उपायों के माध्यम से त्रिपुरा और उससे भी आगे तक पहुंचने चाहिए ।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी में गणतंत्र दिवस समारोह

(बाएं) : डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर – एनईआईएसटी, ''गार्ड ऑफ ऑनर'' का निरीक्षण करते हुए।

(दाएं) : डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी, दिवस पर समूह को संबोधित करते हुए।

सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने 26 जनवरी, 2012 को बड़े उत्साह और शान से देश का 63वां गणतंत्र दिवस समारोह आयोजित किया। इस दिन प्रशासन भवन के सामने एक छोटा–सा कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. पी.जी. राव, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने ''गार्ड ऑफ ऑनर'' का निरीक्षण किया जिसके बाद एनईआईएसटी परिवार की उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया और देश की अपार शान और गर्व के सम्मानस्वरूप राष्ट्रगान गाया गया। इस दिन का मुख्य आकर्षण एनईआईएसटी सुरक्षा स्टाफ सदस्यों, एनईआईएसटी का अनुसंधान छात्रों और एनईआईएसटी के विद्यालय के छात्रों द्वारा मिलकर एक परेड का आयोजन था। इस दिन समूह को संबोधित करते हुए डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, सीएसआईआर–एनईआईएसटी ने कहा कि यह दिन देश के उन महान वीरों का सम्मान करने और उन्हें याद करने के लिए मनाया जाता है जिन्होंने देश की आजादी, प्रभुसत्ता और एकता के लिए अपने जीवन का बलिदान किया। उन्होंने मातृभूमि की रक्षा और सम्मान के लिए अपनी शपथ को दोहराने की सभी से अपील की।

डॉ. राव ने प्रकाशनों, अवार्डो, मंजूर और फाइल किए गए पेटेंटों तथा वार्षिक कारोबार के क्षेत्र में संस्थान की उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला। सामाजिक मोर्चे पर उन्होंने मार्जिनकृत किसानों, बेरोजगार युवाओं और महिला स्वंयसेवी समूहों के लाभ के लिए संस्थान द्वारा आयोजित विभिन्न जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में बताया। बाद में, समारोह के एक भाग के रूप में एनईआईएसटी स्टाफ सदस्यों के बच्चों को मिठाई वितरित की गई जिसके बाद डॉ. जे.एन. बरूआ ऑडिटोरियम में एक संक्षिप्त सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।